A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 26 जुलाई , 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 294, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

विशेष टिप्पणी

यह युवाओं की आत्मशक्ति के साक्षात्कार की नई शुरूआत है..

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

नीट पेपर लीक के खिलाफ उपजे जेन ज़ी के प्रभावी आंदोलन और युवाओंके दबाव के बाद अंततः केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेंद्र प्रधान का पद से इस्तीफा पहाड़-सी सत्ता के आगे निरीह कॉकरोचों की शानदार जीत है। इस कामयाबी, एकजुटता और धैर्य ने दिखा दिया कि जेन ज़ी केवल सोशल मीडिया और स्मार्ट फोन में डूबी जनरेशन भर नहीं है, वक्त आने पर वह हिमालय को झुकाने की भी ताकत रखती है। कोई इसे हल्के में न ले। दिल्ली के जंतर मंतर पर करीब महीना भर चले इस अलग किस्म के आंदोलन ने देश के राजनीतिक आकाश में अभिजीत दिपके नामक नए सितारे को उगा दिया है। हालांकि अभिजीत जेन ज़ी की वय मर्यादा से थोड़े से बड़े हैं, लेकिन जिस तरह उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए पहले युवाओं की वर्च्युअल और बाद में एक्चुअल फौज जुटाई और अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण तरीके से अपनी मांगे मनवाईं, उसने देश में भावी आंदोलनों की दिशा भी तय कर दी है। इस आंदोलन में शामिल युवाओं के तौर-तरीके पर आपत्ति हो सकती है, लेकिन उन्होंने यह तो साबित कर दिया कि अगर देश में किसी ने युवा शक्ति (खासकर वो युवा जो 15 साल से 30 साल के दर्मियान के हैं) को कम आंका तो उसके राजनीतिक अरमानों पर भी पानी फिर सकता है। हालांकि यह इस्तीफा भी मजबूरी में ही सही, सरकार की संवेदनशीलता को दिखाता है। खास बात यह है कि किसी जनआंदोलन के दबाव में मोदी सरकार के किसी मंत्री का यह पहला इस्तीफा है। इसके पूर्व सरकार ने किसानों आंदोलन के बाद तीन विवादित कृषि कानून वापस लिए थे, लेकिन तब भी इस्तीफा किसी का नहीं हुआ था।

दरअसल पेपर लीक मामले को मोदी सरकार ने शुरू से जिस तरह से हैंडल किया, वह सही नहीं था। क्योंकि आम भ्रष्टाचार जैसा मामला नहीं था। लाखों युवाओं के भविष्य की आकांक्षाओं से जुड़ा मामला था। नीट से पहले भी इस देश में विभिन्न परीक्षाओंके पेपरलीक होते रहे हैं, जिससे देश की दुनिया भर में बदनामी हुई है। लेकिन नीट पेपर लीक और उसके बाद हताशा में करीब डेढ़ दर्जन परीक्षार्थियों की आत्महत्या ने समूचे देश को झकझोर रख दिया। और नीट पेपरलीक कांड ने परीक्षा तंत्र में फैले भ्रष्टाचार को भी बेनकाब कर दिया। अगर उसी वक्त घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेकर धर्मेन्द्र प्रधान पद त्याग देते और सरकार से समूचे मामले की निष्पक्ष जांच की मांग करते तो न केवल मंत्री प्रधान बल्कि प्रधानमंत्री की नाक भी ऊंची रहती। लेकिन वैसा कुछ नहीं हुआ। सरकार के इस रवैये से युवाओंका व्यवस्था पर से शक गहराता गया। हालांकि सरकार ने परीक्षा व्यवस्था सुधारने और अपराधियों को पकड़ने के कुछ उपाय किए, लेकिन इससे जो सकारात्मक संदेश जाना था, वो नहीं गया। नतीजतन जो आंदोलन दिपके ने व्यंग्यात्मक रूप से सोशल मीडिया पर शुरू किया था, वो हकीकत में एक बड़े युवा समाज का आंदोलन बन गया। आम युवा में यह भावना घर कर गई कि इस देश में पैसे की ताकत और भ्रष्ट व्यवस्था के आगे उसकी सारी मेहनत बेकार है। अगर वो अभी भी सड़कों पर नहीं उतरा तो उसका भविष्य अंधकारमय है। यानी यह आर-पार की लड़ाई है। यही कारण है आंदोलन को बदनाम करने की कोशिशों और इसके औचित्य पर प्रश्नचिन्ह लगाए जाने के बावजूद बड़ी संख्याए लड़के-लड़कियां आंदोलन में शामिल होने पहुंचे। लाठियां भी खाईं। युवाओं के तेवर देख इसे राजनीतिक दलों ने भी समर्थन दिया। इसी हल्ले में कुछ आपराधिक तत्व भी शामिल हो गए और आंदोलन को हिंसक बनाने की कोशिश की। सुरक्षाकर्मियों पर हमले किए।

इस आंदोलन को कॉकरोच जनता पार्टी ने शुरू किया। पर्यावरणविद एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक ने युवाओं के समर्थन में जंतर मंतर पर आमरण अनशन कर आंदोलन को नैतिक बल दिया। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने देर से ही सही, आंदोलन को खुलकर समर्थन दिया। उधर में सरकार ने सोनम के स्वास्थ्य का हवाला देकर उन्हें अस्पताल में भर्ती करा दिया तो अनशन का जिम्मा अभिजीत दिपके ने संभाला। सरकार की परेशानी यह थी कि वह युवाओंके इस विरोध को दूसरे राजनीतिक अथवा गैर राजनीतिक संगठनों की तरह 'डील' नहीं कर सकती थी। आंदोलन को लेकर उसके रूख में अहंभाव भी था और कुछ हद तक असमंजस भी। क्योंकि युवाओं की नाराजी से आगामी चुनावों में भारी सियासी नुकसान होने का अंदेशा था। उसने शुरू में युवाओंकी ताकत और संकल्प शक्ति को कम आंका। लेकिन जब कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखा तो आंदोलनकारियों की मुख्य मांग प्रधान के इस्तीफे को मान लिया। एक और डर इस आंदोलन के देशव्यापी होने का भी था। बिहार, यूपी और महाराष्ट्र में कॉकरोचों ने रंग दिखाना शुरू कर दिया था। उधर अभिजीत दिपके ने कहा कि हमने सरकार को झुका दिया है। अभी तो यह पहला विकेट है। आगे और भी गिरेंगे। यह जीत युवाओं की एकता की जीत है। दिपके आगे क्या करेंगे, यह अभी देखने की बात है। क्या उनकी 'कॉकरोच जनता पार्टी' किसी राजनीतिक पार्टी में तब्दील होकर चुनावी राजनीति भी करेगी या फिर वो केवल युवाओं के मुद्दे उठाने का माध्यम बनी रहेगी, यह आगे तय होगा। लेकिन एक शुरूआत युवाओं की आत्मशक्ति के साक्षात्कार की हो चुकी है, इसमें संदेह नहीं। इस मुद्दे पर अभी और भी राजनीति होगी, सब इस चूल्हे पर अपनी अपनी रोटियां सेकेंगे। लेकिन यह आंदोलन एक सबक भी दे रहा है। सरकार के लिए सबक यह है कि उसे ज्यादा लोकतांत्रिक और संवेदनशील होना पड़ेगा। हर जनआंदोलन सरकार के खिलाफ षड्यंत्र नहीं होता। अगर मोदी सरकार शुरू में ही आंदोलनकारियों से संवाद करती तो शायद प्रधान के इस्तीफे की नौबत भी नहीं आती। दूसरे, प्रतियोगी और प्रवेश परीक्षाओं की फुलप्रूफ और विश्वसनीय व्यवस्था बनानी होगी। एनटीए जैसी इतनी बड़ी परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था में अधिकांश काम संविदाकर्मियों के भरोसे चल रहा था, यह बात ही अपने आप में चौंकाने वाली और अगंभीरता की द्योतक है। विपक्ष के लिए सबक यह है कि उसे खुद अपने मुद्दे उठाना और जनता से जुड़ना सीखना होगा। उधार का सिंदूर मांग में भरने से राजनीतिक सुहाग ज्यादा नहीं टिकता। कॉकरोचों को साथ लेना है तो उनके जैसी जीवटता भी दिखानी होगी।

नीट विवाद

'प्रधान' कर गए 'प्रस्थान'

- छात्र आंदोलन के बीच शिक्षा मंत्री के पद से दिया इस्तीफा
- कहा-छात्रों के हित और शिक्षा व्यवस्था की गरिमा सर्वोपरि है

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट परीक्षा विवाद और लगातार बढ़ते राजनीतिक दबाव के बीच केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शिक्षा मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है। लंबे समय से विपक्ष और प्रदर्शनकारी संगठन उनकी जिम्मेदारी तय करने की मांग कर रहे थे। शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर खुद धर्मेंद्र प्रधान ने अपने इस्तीफे की बात कही। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपना त्यागपत्र प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेज दिया है। उन्होंने पोस्ट कर कहा, पिछले 10 दिनों का घटनाक्रम देखकर मेरा मन दु:खी है। यह मेरे लिए व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का विषय नहीं है। भारत की युवाशक्ति ही, इस देश की असली ताकत है। देश की युवाशक्ति को भ्रम के कुचक्र में फंसने नहीं देंगे, यही मेरा संकल्प है।

प्रह्लाद जोशी संभालेंगे शिक्षा मंत्रालय की अतिरिक्त जिम्मेदारी

आखिरकार केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा पीएम मोदी को भेज दिया है। शनिवार शाम करीब 8.15 बजे प्रधान के मंत्रालय का चार्ज प्रह्लाद जोशी को दे दिया गया है।

धर्मेंद्र प्रधान ने युवाओं के नाम लिखा लेटर

धर्मेंद्र प्रधान ने अपने लेटर में कहा कि वह पिछले चार दशकों से अधिक समय से छात्र, शिक्षक और शिक्षा सुधार के क्षेत्र से जुड़े रहे हैं। उन्होंने लिखा कि एक सशक्त, समावेशी और दूरदर्शी शिक्षा व्यवस्था ही मजबूत राष्ट्र की आधारशिला है। उन्होंने नीट-यूजी परीक्षा में सामने आई अनियमितताओं का जिक्र करते हुए कहा कि भारत सरकार ने मामले को तुरंत संज्ञान में लिया और जांच सीबीआई को सौंपी गई। साथ ही परीक्षा रद्द कर दोबारा परीक्षा आयोजित करने का निर्णय लिया गया। उन्होंने बताया कि अगले वर्ष से नीट यूजी परीक्षा को कंप्यूटर आधारित टेस्ट मोड में कराने का फैसला लिया गया है। प्रधान ने कहा कि इस दौरान सरकार की प्राथमिकता 20 लाख से अधिक छात्रों की परीक्षा सुचारू रूप से कराना थी। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और जिला प्रशासन के सहयोग से 21 जून 2026 को परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित की गई।

आंदोलन खत्म तीनों मांगें पूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉकरोच जनता पार्टी ने शनिवार को आंदोलन खत्म कर दिया। केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा, जितेंद्र सिंह के साथ प्रवक्ता सौरभ दास, आशुतोष रांका ने संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसका ऐलान किया। सौरभ दास ने कहा कि जंतर-मंतर मौजूद सभी प्रदर्शनकारी अब अपने घर लौट जाएं। रांका ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में सरकार से 3 बार बातचीत हुई। हमारी तीनों मांगें मान ली गई हैं। इनमें धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा भी हो गया है।

प्रधान के इस्तीफे के बाद जंतर-मंतर पर मना जश्न

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की खबर आते ही जंतर-मंतर पर जश्न शुरू हो गया। छात्रों ने छात्र एकता जिंदाबाद के नारे लगाए। राष्ट्रगान गाया। इस दौरान नीट पेपर लीक के बाद जान गंवाने स्टूडेंट्स के लिए 2 मिनट का मौन रखा गया। कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर अभिजीत दीपके ने कहा, क्या कह

रहे थे, इस सरकार में इस्तीफे नहीं होते। झुकती है दुनिया झुकाने वाला चाहिए। मंत्री का इस्तीफा तो हो गया है, लेकिन हमारी दो और मांगे हैं। उन्होंने कहा, हम ऐसे नहीं जाएंगे कॉकरोच एक बार घुसता है तो निकलता नहीं है। जिन बच्चों ने सुसाइड किया उनके परिवार को एक करोड़ मुआवजा मिले। पुलिस वालों पर ऐक्शन होना चाहिए। दिल्ली पुलिस अधिकारी याद रखें कॉकरोच से पंगा लिया है। अभिजीत ने कहा, 'हमनें तो एक मंत्री का इस्तीफा ले लिया तो तुम लोग क्या चीज हो। छात्रों पर केस वापस होने चाहिए।

पेपर लीक मामलों पर सख्ती, मप्र में बनेंगे 4 फास्ट ट्रैक कोर्ट

फास्ट ट्रैक कोर्ट में 3 माह में होगा परीक्षा जैसे अन्य मामलों का निराकरण : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश सरकार शिक्षक और विद्यार्थी वर्ग के कल्याण से जुड़े सभी विषयों पर अत्यंत गंभीर और संवेदनशील है। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और विद्यार्थियों के हित में लगातार महत्वपूर्ण निर्णय लिए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देश की जनता के हित में जब भी कोई निर्णय लिया जाता है, मध्यप्रदेश उसे लागू करने और निर्णय के अनुरूप नीतिगत व्यवस्था बनाने वाला पहला राज्य होता है। समय की जरूरत है कि युवाओं से संबंधित न्यायिक फैसले द्रुत गति से हों। इसके लिए मध्यप्रदेश में 4 फास्ट ट्रैक कोर्ट्स (भोपाल, इंदौर, जबलपुर और ग्वालियर में) बनाये जायेंगे। पेपर लीक और परीक्षा सहित अन्य मामलों का फास्ट ट्रैक कोर्ट में मात्र 3 माह में निराकरण किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को मध्यप्रदेश विधानसभा स्थित सेंट्रल हॉल में मीडिया प्रतिनिधियों से चर्चा में यह जानकारी दी।

परीक्षा विवादों का 90 दिन में होगा निपटारा, विद्यार्थियों को बड़ी राहत

एमपी के सीएम मोहन यादव ने बताया कि कहा कि राज्य सरकार शिक्षक और विद्यार्थियों के हितों को लेकर पूरी तरह संवेदनशील है। उन्होंने कहा कि शिक्षा व्यवस्था को पारदर्शी और मजबूत बनाने के लिए लगातार सुधार किए जा रहे हैं।मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश में भोपाल, इंदौर, जबलपुर और ग्वालियर में चार फास्ट ट्रैक कोर्ट स्थापित किए जाएंगे। इन अदालतों में पेपर लीक, परीक्षा विवाद और विद्यार्थियों से जुड़े अन्य मामलों का अधिकतम तीन महीने के भीतर निराकरण किया जाएगा, ताकि युवाओं को समय पर न्याय मिल सके। सीएम यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विद्यार्थियों के भविष्य को लेकर बेहद गंभीर हैं। नीट पेपर लीक की जानकारी मिलते ही केंद्र सरकार ने तत्काल एसआईटी का गठन किया, आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की और दोबारा परीक्षा आयोजित कराई। उन्होंने कहा कि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर तैयार किए जाएंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू करने वाला पहला राज्य

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि मध्यप्रदेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू करने वाला देश का पहला राज्य है। पिछले ढाई वर्षों में प्रदेश में तीन नए शासकीय विश्वविद्यालय शुरू किए गए हैं।

मोदी कार्यकाल में मेडिकल कॉलेजों की संख्या दोगनी

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में देशभर में मेडिकल कॉलेजों की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई है। विश्वविद्यालयों की संख्या 641 से बढ़कर 1400 से अधिक हो चुकी है, जबकि मेडिकल सीटें 50 हजार से बढ़कर 1 लाख से अधिक पहुंच गई हैं।

सुप्रभात

सभी चिड़ियाँ
क्षिप्र गति से बोलती हैं

कोई कोई एक दो शब्द
फिर एक दो शब्द
फिर एक दो शब्द
कोई कोई पूरा वाक्य बोलती हैं
फिर एक वाक्य
फिर एक वाक्य
पर कोई कोई
दो तीन वाक्यों के बिना
अपनी बात नहीं कह पातीं
फिर दो तीन वाक्य
फिर दो तीन वाक्य
पर वह चिड़िया
बोलती ही जाती थी
लगातार एक साँस में
फिर साँस भरकर
बोलती ही जाती थी
लगातार एक साँस में

कितने दुख से भरी हुई थी वह
कितना कुछ था कहने को उसके पास

अपने अनुभव से मैं जानता था
सुख का वृतांत तो इतना दीर्घ नहीं हो सकता

आवाज़ अलग अलग है।
- विनोद पदरज

बंगाल में 650 साल पुरानी अदीना मस्जिद के बाहर पूजा

- 'आदिनाथ मंदिर' के दावे के बीच शिवलिंग स्थापना की तैयारी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में मंदिर-मस्जिद विवाद गहराता जा रहा है। ऐसा इस वजह से क्योंकि भारतीय जनता पार्टी नेता के नेतृत्व वाले एक राइट-विंग ग्रुप ने मालदा जिले में एक 650 साल पुरानी मस्जिद के पास पूजा-अर्चना की। इसके बारे में उनका दावा है कि वह कभी मंदिर हुआ करती थी। आगामी सोमवार को 'आदिनाथ पुरातन शिव मंदिर' संगठन मस्जिद के बाहर एक विशाल शिवलिंग स्थापित करने की योजना बना रहा है। मालदा के पांडुआ में स्थित आदिना मस्जिद का निर्माण सिकंदर शाह ने सन् 1373 में करवाया था। एएसआई के मुताबिक, यह मध्यकालीन उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी मस्जिद थी। हालांकि, हिंदू समूह और भाजपा का दावा है कि यह मस्जिद भगवान शिव को समर्पित 'आदिनाथ मंदिर' के स्थान पर बनाई गई थी।

- **इस तथाकथित मस्जिद में हिंदू और बौद्ध मूर्तियां हैं-** 'आदिनाथ पुरातन शिव मंदिर' के मुख्य संरक्षक और उत्तर बंगाल के लिए बीजेपी के 'सुशासन विंग' की संयोजक काजल

गोस्वामी ने कहा,इस तथाकथित मस्जिद में हिंदू और बौद्ध मूर्तियां हैं। आदिनाथ मंदिर को नष्ट करके ही यहां मस्जिद बनाई गई थी। संगठन का दावा है कि मस्जिद में शिवलिंग के अलावा कई हिंदू और बौद्ध प्रतीक भी मौजूद हैं। उनका कहना है कि वे जल्द ही इस मुद्दे पर एएसआई की रिपोर्ट की मांग करते हुए कलकत्ता हाई कोर्ट का रुख करेंगे। गोस्वामी ने कहा,हमारा मकसद मंदिर को बहाल करना और उसके अंदर शिवलिंग स्थापित करना है। मस्जिद के पास स्थापना के लिए 289 किलोमीटर दूर तारकेश्वर से 3.6 फीट ऊंचा और 1.5 टन वजन वाला शिवलिंग लाया जा रहा है। गोस्वामी ने जोर देकर कहा,लेकिन हम कानून का पालन करेंगे।

संसद में सामिक भट्टाचार्य ने उठाया था मंदिर वाला मुद्दा

पांच दिसंबर, 2025 को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सांसद और वर्तमान बंगाल अध्यक्ष सामिक भट्टाचार्य ने इस मुद्दे को संसद में उठाया। सदन में अपने बयान में उन्होंने कहा,अदीना मस्जिद बंगाल सल्तनत के सुल्तान सिकंदर शाह ने 1373 ईस्वी में बनवाई थी। यह मस्जिद पहले से मौजूद हिंदू और बौद्ध ढांचों की सामग्री का इस्तेमाल करके बनाई गई थी। स्थानीय परंपराओं और ऐतिहासिक वृत्तांतों से पता चलता है कि यह जगह मूल रूप से भगवान शिव और भगवान विष्णु को समर्पित आदिनाथ मंदिर की थी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c न्यूनतम 18°c

2

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 26 जुलाई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

राजगढ़ में तालाब में गिरी कार, 5 दोस्तों की मौत

20 मिनट बाद क्रेन से निकाली गाड़ी, कांच तोड़कर निकाले शव ; खाटू श्याम जा रहे थे

राजगढ़ (भोपाल) (नप्र)। मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले में शनिवार सुबह सड़क हादसे में 5 दोस्तों की मौत हो गई। शाजापुर से राजस्थान के खाटू श्याम मंदिर के दर्शन के लिए जा रही कार भीलखेड़ी जोड़ के पास अनियंत्रित होकर सड़क किनारे तालाब में जा गिरी। देखते ही देखते कार पूरी तरह पानी में डूब गई।

हादसे के बाद स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। क्रेन बुलाकर करीब 20 मिनट बाद तालाब से कार को बाहर निकाला गया। इसके बाद कार के कांच तोड़कर अंदर फंसे लोगों को बाहर निकाला

गया, लेकिन तब तक पांचों की मौत हो चुकी थी। हादसा सुबह करीब 8 बजे हुआ।

तेज रफ्तार से हादसे की आशंका– प्रारंभिक जांच में हादसे की वजह तेज रफ्तार के कारण कार का अनियंत्रित होना मानी जा रही है। पुलिस ने एहतियातन तालाब में सर्च ऑपरेशन भी चलाया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कार में कोई अन्य व्यक्ति सवार नहीं था। खुजनेर थाना प्रभारी रवि ठाकुर ने बताया कि सभी शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

खाटू श्याम दर्शन के लिए निकले थे

पुलिस के मुताबिक, सभी मृतक शाजापुर जिले के अरंडिया और अरंडिया खुर्द गांव के रहने वाले थे। शनिवार सुबह वे एक ही कार से राजस्थान स्थित खाटू श्याम मंदिर के दर्शन के लिए निकले थे, लेकिन राजगढ़ पहुंचने से पहले ही हादसे का शिकार हो गए। मृतकों में गोविंद तिवारी और कमल किशोर तिवारी आपस में चचेरे भाई थे।

इन 5 लोगों की हुई मौत

- गोविंद तिवारी (55), निवासी अरंडिया खुर्द।
- कमल किशोर तिवारी (57-58), निवासी अरंडिया खुर्द।
- शंकर नाथ (58), निवासी अरंडिया खुर्द।
- अरविंद वर्मा (50), निवासी अरंडिया।
- रोहित पटेल (40-42), निवासी अरंडिया

अरविंद बस कंडक्टर थे, दो बेटे हैं

मृतक अरविंद वर्मा विवाहित थे। उनके दो बेटे हैं। वे निजी बस में कंडक्टर के रूप में काम करते थे। परिवार के मुताबिक, करीब चार साल पहले उनके छोटे भाई की भी पेड़ से गिरने से मौत हो गई थी।

भोपाल समेत देशभर में गौ सम्मान आह्वान अभियान

27 जुलाई को सरकार को सौंपेंगे ज्ञापन, गाय को सम्मान समेत देशभर में गौ-हत्या रोकने की मांग

भोपाल (नप्र)। भोपाल समेत देशभर में गौहत्या रोकने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत भोपाल में भी 27 जुलाई (सोमवार) को प्रशासन को ज्ञापन सौंपा जाएगा। अभियान में गाय को सम्मान दिलाने की बात कही गई है।

कार्यक्रम के प्रभारी श्रीराम शर्मा ने बताया कि यह अभियान का दूसरा चरण है। इसके तहत जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल और मुख्यमंत्री तक ज्ञापन भेजा जाएगा। इसके अलावा भोपाल जिले से अकेले 2 लाख से अधिक हस्ताक्षर और एक प्राथना पत्र भी भेजा जाएगा। कार्यक्रम के तहत सोमवार सुबह बजे सभी कालीघाट के पास गौ भक्त गुफा मंदिर पर एकत्रित होंगे। गौमाता का पूजन और शंखनाद होगा, इसके बाद 9.15 बजे तक श्री राम जय राम जय जय राम विजय मंत्र का सामूहिक जप होगा। इसके बाद झंडे-बैनर लेकर भव्य प्रार्थना-यात्रा जिलाधिकारी कार्यालय तक निकाली जाएगी, जिसमें गोमाता की झांकी और बुलडोजर पर हस्ताक्षरों का प्रदर्शन भी शामिल रहेगा। संत-महात्मा, सामाजिक-धार्मिक संगठन, किसान और बड़ी संख्या में गौभक्त इसमें शामिल होंगे।

हिमाचल-गोवा से ज्यादा एमपी में बढ़े देशी पर्यटक

'देश का दिल' देखने रोज आ रहे 500 विदेशी और 3.82 लाख देशी पर्यटक

भोपाल (नप्र)। दशकों से देश-विदेश के पर्यटकों की पहली पसंद रहे गोवा और हिमाचल प्रदेश जैसे पारंपरिक पर्यटन स्थलों की तुलना में अब 'हार्ट ऑफ इंडिया' मध्य प्रदेश ने देश के पर्यटन मानचित्र पर पर्यटकों की पसंद बन रहा है।

साल 2025 के आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि जहां हिमाचल प्रदेश में घरेलू पर्यटकों की संख्या में गिरावट आई है और गोवा में पर्यटकों की संख्या में सीमित रही है, वहीं मध्य प्रदेश में पर्यटकों ने नया इतिहास रच दिया।

वर्ष 2025 के दौरान मध्य प्रदेश में रोजाना औसतन 3.82 लाख से अधिक देशी और करीब 500 विदेशी सैलानी पहुंचे, जिसके दम पर राज्य पूरे साल में करीब 14 करोड़ पर्यटकों की मेजबानी करने में सफल रहा।

हिमाचल प्रदेश-गोवा जैसे राज्य में घटे टूरिस्ट– राज्यसभा में पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा दिए गए जवाब के अनुसार, हिमाचल प्रदेश में वर्ष 2024 की तुलना में वर्ष 2025 में घरेलू पर्यटकों की संख्या में गिरावट दर्ज की गई है। हिमाचल में जहां वर्ष 2024 में 1.80 करोड़ से अधिक देशी पर्यटक आए थे,

वहीं वर्ष 2025 में यह आंकड़ा घटकर 1.44 करोड़ रह गया।

दूसरी ओर, समुद्री तटों के लिए मशहूर गोवा वर्ष 2025 में कुल मिलाकर केवल 1.03 करोड़ घरेलू पर्यटकों को ही आकर्षित कर सका। इनकी तुलना में मध्य प्रदेश ने जबरदस्त वृद्धि दिखाते हुए वर्ष 2021 के 2.55 करोड़ घरेलू पर्यटकों के आंकड़े को वर्ष 2025 में 13.95 करोड़ तक पहुंचा दिया। यह आंकड़ा दिखाता है कि पर्यटक अब केवल पहाड़ों या समुद्र तटों तक ही सीमित न रहकर मध्य प्रदेश के समृद्ध इतिहास, वन्यजीव अभयारण्यों और आध्यात्मिक स्थलों का रुख कर रहे हैं।

5 सालों में एमपी में देशी पर्यटक 446 प्रतिशत बढ़े– मध्य प्रदेश में पर्यटन विकास की गति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले पांच सालों (2021 से 2025) में राज्य में घरेलू पर्यटकों की संख्या में 446 प्रतिशत से अधिक की जबरदस्त बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वर्ष 2025 में मध्य प्रदेश में कुल 13,95,96,049 घरेलू पर्यटक और 1,81,743 विदेशी पर्यटक पहुंचे।

यदि दैनिक औसत के हिसाब से देखें तो राज्य में हर रोज औसतन 3,82,455 देशी और 498 विदेशी सैलानियों ने दस्तक दी। मध्य प्रदेश के प्रमुख धार्मिक स्थल, राष्ट्रीय उद्यान और ऐतिहासिक धरोहरें पर्यटकों की इस भारी आमद का मुख्य केंद्र बनी हुई हैं, जिससे राज्य देश के शीर्ष पर्यटन राज्यों की सूची में 9वें स्थान पर मजबूती से टिका हुआ है।

हिमाचल प्रदेश में पर्यटकों की संख्या घटी

प्राकृतिक आपदाओं, भूस्खलन और बदलते मौसम के मिजाज के बीच हिमाचल प्रदेश के पर्यटन ग्राफ को वर्ष 2025 में झटका लगा है। संसद में पेश आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2024 में हिमाचल प्रदेश ने 1,80,41,929 घरेलू पर्यटकों की मेजबानी की थी, लेकिन वर्ष 2025 में यह संख्या घटकर 1,44,11,327 पर आ गई।

यानी महज एक साल के भीतर हिमाचल में करीब 36 लाख घरेलू पर्यटक कम हो गए। हालांकि, विदेशी पर्यटकों के मामले में राज्य में मामूली बढ़ोतरी देखी गई और यह संख्या वर्ष 2024 के 82,765 से बढ़कर 2025 में 84,828 तक पहुंची, लेकिन घरेलू पर्यटकों की भारी गिरावट ने राज्य के कुल पर्यटन ग्राफ को प्रभावित किया।

संक्षिप्त समाचार

क्रिकेटर आकाशदीप मुकेश बने डीएसपी

- सीएम के पैर छुए, सम्राट बोले- अगले आईपीएल ऑक्शन में बिहार की टीम भी रहेगी

पटना (एजेंसी)। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय लेवल पर मेडल जीतने वाले 19 खिलाड़ियों को सरकारी नौकरी का जॉइनिंग लेटर दिया। इनमें भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज आकाशदीप और मुकेश कुमार को पुलिस उपाधीक्षक और एथलेटिक्स खिलाड़ी पीयूष राज को पुलिस अवर निरीक्षक पद पर नियुक्ति दी गई। वहीं आकाशदीप और मुकेश कुमार ने पैर छूकर मुख्यमंत्री से आशीर्वाद लिया। ऊर्जा ऑडिटोरियम में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस साल 106 खिलाड़ियों को लेटर पहले ही दिए जा चुका है। इस योजना में नियुक्ति-पत्र, खेल छात्रवृत्ति चयन-पत्र और खेल सम्मान राशि दी गई। 19 उत्कृष्ट खिलाड़ियों को नियुक्तिपत्र मिला है।

प्रादेशिक लोकभाषा गोष्ठी आज

भोपाल। मध्यप्रदेश लेखक संघ की प्रादेशिक गोष्ठियों की श्रृंखला के अंतर्गत 26 जुलाई को लोकभाषा गद्य/पद्य गोष्ठी का आयोजन किया गया है। दुष्यन्त कुमार संग्रहालय में दोपहर 2 बजे प्रारंभ होने वाली इस गोष्ठी में प्रदेश की लोकभाषा के अनेक रचनाकार अपनी रचनाओं का पाठ करेंगे। गोष्ठी में विनोद मिश्र सुरमणि, राजेश तिवारी, महेन्द्र भट्ट, आशा पाण्डेय, सुनील त्रिपाठी निराला (बुंदेली), विक्रम विवेक, संगीता तलेरा, मॉंगीलाल कुलश्रेष्ठ (मालवी), निर्मल शर्मा, छोगालाल कुमरावत (निमाड़ी) और सत्यदेव सोनी (बघेली) को रचनापाठ हेतु आमंत्रित किया गया है। इस कार्यक्रम के मुख्यअतिथि बुंदेली के वरिष्ठ कवि डॉ किशन तिवारी होंगे और लेखक संघ के अध्यक्ष राजेन्द्र गट्टानी कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे, जबकि कैलाश गुप्ता सुमन सारस्वत अतिथि होंगे।

सीजेपी प्रोटेस्ट को मुंबई में मिला बड़ा समर्थन

- राज ठाकरे ने तिरंगा मार्च से पहले किया बड़ा ऐलान, सीएम समेत वीआईपी की सुरक्षा बढ़ी

मुंबई (एजेंसी)। दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी के संसद मार्च में हुए लाठीचार्ज और पुलिस से झड़प के बाद छात्रों का आंदोलन देशव्यापी हो गया है। जंतर-मंतर पर जेन जेड का जमावड़ा है तो वहीं दूसरी आर्थिक राजधानी मुंबई में दादर–शिवाजी पार्क का एरिया जंतर मंतर–2 बन गया है। शुक्रवार को तिरंगा यात्रा में बड़ी संख्या में युवा यहां पहुंचे। सीजेपी प्रोटेस्ट के समर्थन में जुटे युवाओं के हाथों

में स्लोगन और पोस्टर थे। जो पीएम मोदी पर केंद्रित थे। इनमें एक पोस्टर ने सभी का ध्यान खींचा इसमें लिखा था कि हमें न्यायवाला चाहिए, चाय वाला नहीं, लेकिन राज ठाकरे ने तिरंगा मार्च से 26 जुलाई को शिवसेना और मनसे की ओर से आयोजित संयुक्त मार्च गैर-राजनीतिक होगा। इसमें किसी भी पार्टी का झंडा नहीं होगा और नारे सिर्फ सरकार की कार्रवाई की निंदा करने और छात्रों के समर्थन में ही लगाए जाएंगे। प्रोटेस्ट में पहुंचे उद्धव ठाकरे के बेटे आदित्य ठाकरे ने अभिजीत दिपके से फोन पर चर्चा की। इस मौके पर राज ठाकरे के बेटे अमित ठाकरे भी मौजूद रहे। दिल्ली के बाद मुंबई में सीजेपी के समर्थन में हुए प्रदर्शन ने सबसे ज्यादा ध्यान खींचा।

अब नई पीढ़ी को आदेश न दें उनसे बातचीत करें: भागवत

- हम मनमानी करेंगे, शक्ति से सबके मालिक बनेंगे, ऐसा नहीं हो सकता

नई दिल्ली (एजेंसी)। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने शनिवार को दिल्ली में कहा, आज की नई पीढ़ी बहुत सारे सवाल पूछती है। हमें आदेश देने की बजाय उनसे बातचीत करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें हर बात के पीछे का तर्क समझाना चाहिए, न कि आदेश देना चाहिए। संवाद के जरिए ही उन्हें सही दिशा दिखाई जा सकती है। हम मनमानी करेंगे, शक्ति से सबके मालिक बनेंगे, ऐसा नहीं हो सकता। उनका यह बयान ऐसे समय आया है, जब देश में पेपर लीक के मुद्दे को लेकर छात्र जंतर-मंतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

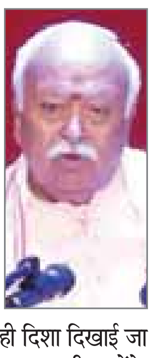

पहले माता-पिता की बात ही अंतिम होती थी लेकिन आज नहीं

मोहन भागवत ने कहा, 'पहले के समय में माता–पिता की बात बिना किसी सवाल के मान ली जाती थी। जब हम छोटे थे, तो माता–पिता जो कहते थे, वही अंतिम होता था।' कोई बहस नहीं होती थी। श्रद्धा थी और प्रतिक्रिया भी नहीं होती थी, लेकिन अब समय बदल गया है। नई पीढ़ी सवाल पूछती है और उन्हें हर बात का तर्क बताना पड़ता है। नई पीढ़ी को बहुत अपनापन देने की जरूरत है, उन्हें समय देने की जरूरत है और सबसे ज्यादा संवाद की जरूरत है। आज डिक्टेशन नहीं, डिस्कशन की जरूरत है। ऑर्डर नहीं, कॉन्शसनेस (जागरुकता) की जरूरत है। आज परिवारों में आपसी बातचीत पहले की तुलना में काफी कम हो गई है। बच्चों और युवाओं के साथ नियमित संवाद ही उन्हें सही दिशा दे सकता है। केवल आदेश देने से बात नहीं बनेगी।

भारत ने स्वदेशी काउंटर-ड्रोन सिस्टम का कर लिया ट्रायल

- सेना के कम्युनिकेशन नेटवर्क से जुड़ सकता है भार्गवास्त्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना के सामने सोलर डिफेंस एंड एयरोस्पेस लिमिटेड ने नागपुर में अपने स्वदेशी काउंटर–ड्रोन सिस्टम भार्गवास्त्र का सफल लाइव ट्रायल किया। कंपनी का दावा है कि यह

सिस्टम हवाई हमलों और ड्रोन स्वार्म (ड्रोन के झुंड) जैसे बढ़ते खतरों से निपटने के लिए तैयार है। इसे सेना के कमांड और कम्युनिकेशन नेटवर्क से भी जोड़ा जा सकता है। मौजूदा जानकारी के मुताबिक, यह सिस्टम खतरनाक ड्रोन और खुद से उड़ने वाले ड्रोन के झुंड को रोकने के लिए बनाया गया है। इनपुट में ट्रायल की तारीख और सेना की ओर से आधिकारिक प्रतिक्रिया की जानकारी नहीं दी गई है। यह जानकारी अभी सामने नहीं आई है। कंपनी के मुताबिक ट्रायल सफल रहा। भार्गवास्त्र को गाड़ी पर आसानी से लगाया जा सकता है। इससे जरूरत पड़ने पर इसे तेजी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर तैनात किया जा सकता है। कंपनी का कहना है कि इससे अलग–अलग इलाकों में तुरंत ऑपरेशन करना आसान होगा।

भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ी से युवाओं में है आक्रोश

- मायावती ने कहा, सरकार और विपक्ष दोनों हैं गलत

शिक्षा सुधार के मुद्दे को छोड़ सिर्फ सियासत कर रहे

लखनऊ (एजेंसी)। देश में नीट-यूजी समेत विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के कथित पेपरलीक को लेकर नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर छात्रों के आंदोलन पर बसपा प्रमुख मायावती ने पक्ष-विपक्ष दोनों को आड़े हाथों लिया। मायावती ने कहा कि शिक्षा सुधार के मुद्दे को छोड़कर दोनों पक्ष सिर्फ सियासत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं की नाराजगी और परीक्षाओं में पारदर्शिता की मांग को राजनीतिक चश्मे से देखने के बजाय व्यवस्था सुधार पर ध्यान देना चाहिए। मायावती ने कहा कि नीट और अन्य परीक्षाओं में कथित पेपरलीक के बाद देशभर में छात्रों में भारी असंतोष है। कई परीक्षार्थियों के मानसिक तनाव और आत्महत्या जैसी घटनाओं ने भी चिंता बढ़ाई है। ऐसे में नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर छात्रों का शांतिपूर्ण धरना लोगों की सहानुभूति हासिल कर रहा है।

- **राजनीतिक दलों में एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़–** मायावती ने कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर सरकार और विपक्ष के बीच राजनीतिक घमासान तेज हो गया है। अब इस मुद्दे को लेकर सड़क से संसद तक राजनीतिक दलों में एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी है। इसका असर कई राज्यों में भी दिखाई दे रहा है, जहां प्रदर्शन और विरोध के कारण तनाव का माहौल बन रहा है। उन्होंने अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे ऐसे हालात में संयम और सतर्कता बनाए रखें। बसपा प्रमुख ने कहा कि जंतर-मंतर पर आंदोलन कर रहे छात्रों के खिलाफ कार्रवाई न हो।

यूपी-बिहार में प्रदर्शन के दौरान हिंसा, फायरिंग-पथराव

- 15 घायल, दो एसपी भी चोटिल, जश्न मना रहे स्टूडेंट्स
- आरा में रेलवे ट्रैक पर प्रदर्शनकारी, प्रयागराज में झड़प

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक मामले और लाठीचार्ज के खिलाफ छात्रों का प्रदर्शन देशभर में शुक्रवार को भी प्रदर्शन जारी रहा। बिहार में बंद आयोजित किया गया। इस दौरान पटना और सीवान सहित 8 जिलों में छात्रों ने पुलिस पर पथराव किया। पथराव में सीवान में पथराव से एसपी घायल हो गए। इसके बाद पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागे और करीब 10 राउंड फायरिंग की। सीतामढ़ी में भी पथराव हुआ। एसपी समेत 12 लोग घायल हो गए।

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज, लखनऊ और सहारनपुर समेत कई शहरों में प्रदर्शन हो रहे हैं। प्रयागराज में 10 हजार लोग

सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं। **बिहार बंद के दौरान सीवान में 10 राउंड फायरिंग–** नीट पेपर लीक और लाठीचार्ज के खिलाफ बुलाया गया बिहार बंद अब हिंसक होता जा रहा है। सीवान में प्रदर्शनकारियों ने जमकर पत्थरबाजी की, पुलिस पर हमला किया। भीड़ को हटाने के लिए पुलिस ने पहले आंसू गैस के गोले दागे गए। 10 राउंड से ज्यादा सीधी फायरिंग हुई है।

धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे से एमपी के स्टूडेंट्स भी खुश

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की खबर आते ही इंदौर में 25 दिन से आंदोलन कर रहे छात्रों के बीच जश्न का माहौल बन गया। टंट्या भील चौराहे पर डटे युवाओं और विद्यार्थियों ने एक–दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत की खुशी जताई। इस दौरान माहौल पूरी तरह देशभक्ति के रंग में रंगा नजर आया। छात्रों ने हाथों में तिरंगा लहराते हुए देशभक्ति के गीतों पर जमकर डांस किया और छात्र एकता जिंदाबाद के नारे लगाए। प्रदर्शनकारी छात्रों का कहना है कि यह उनके लंबे संघर्ष और एकजुटता की जीत है। हालांकि परीक्षा प्रणाली में पूरी पारदर्शिता और सुधार की उनकी मुख्य मांगें पूरी होने तक यह लड़ाई जारी रहेगी।

सोशल मीडिया से ढूंढते थे ग्राहक, तीन तस्करों से एमडी ड्रग्स जब्त

इंदौर। मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले अब हाईटेक हो गए हैं। वे इंस्टाग्राम और वाटसअप की मदद से ग्राहकों को ढूंढकर उन्हें मादक पदार्थ सप्लाय करते थे। ऐसे तीन युवकों को लसूड़िया पुलिस ने दबोच लिया है। तीनों से हजारों की 19.14 ग्राम एमडी ड्रग्स और बाइक जब्त की है। वर्तमान में पुलिस नशे से दूरी है जरूरी अभियान चला रही है। इस अभियान का उद्देश्य शहर को नशामुक्त बनाना है। लेकिन, तस्कर पुलिस के अभियान को पलीता लगाने में जुटे हुए हैं। पुलिस को सूचना मिली थी कि निरंजनपुर सब्जी मंडी गेट पर तस्कर ग्राहक के इंतजार में खड़ा है। सूचना के बाद यहां से बदमाश जफर पठान निवासी ग्रीन पार्क कालोनी को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में आरोपी जफर ने ड्रग्स आरोपी जाहिद उर्फ जावेद खान निवासी ग्राम कोठरी जिला प्रतापगढ से खरीदकर लाना बताया। जाहिद की निशानदेही पर एक अन्य आरोपी कन्हैयालाल गायरी निवासी ग्राम कोठरी जिला प्रतापगढ को ग्राम लसूडिया परमार भारत पेट्रोल पंप के पास बायपास से पकड़ा। उनके पास से 34.31 ग्राम एमडी ड्रग्स और बाइक बरामद की गई। जाहिद ने बताया कि वह अपने इंस्टाग्राम अकाउंट और व्हाट्सअप के जरिए इन्दौर और अन्य स्थान पर रहने वाले ग्राहकों से सम्पर्क करता था। आरोपी जफर पर चंदन नगर, लसूड़िया, जाहिद पर जोधपुर, प्रतापगढ़, लसूड़िया में कई केस दर्ज हैं।

शराब के पैसे नहीं दिए तो मारपीट

इंदौर। पुलिस की तमाम सख्ती के बाद भी बदमाश वारदात करने से बाज नहीं आ रहे हैं। छत्रीपुरा थाना क्षेत्र में रास्ता बताने के एवज में शराब के पैसे बदमाशों ने मांगे। जब राहगीर ने पैसे नहीं दिए तो उसके साथ मारपीट की। मामले में पुलिस ने तीन बदमाशों को दबोच लिया है। छत्रीपुरा थाने पर 23 जुलाई को फरियादी सचिन पिता प्रहलाद चौधरी ने बताया कि वह अपने दोस्त शिवराज को उसके घर भंवरकुआ छोड़ने रात 1 बजे जा रहा था। इसी बीच, रास्ता भूल गया। कुछ समझ पाता, तभी सफेद स्कूटी पर तीन युवक दिखे। मैंने अपनी बाइक रोककर रास्ता पूछा तो तीनों ने शराब के लिए पैसे मांगे, जब पैसे नहीं दिए तो दोनों के साथ मारपीट की। घटना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस ने अज्ञात आरोपियों पर धारा 115(2), 119(1), 296, 3(5) तथा 351(2) में केस दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी। आरोपियों को पकड़ने टीआई के निर्देशन में टीम गठित की गई। टीम ने घटना स्थल पर लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज खंगाले। मुखबिर सक्रिय किए। इसके बाद आरोपियों पीयूष पिता बंटी योगी, आयुष उर्फ प्रभुलाल तंवर और नाबालिग साथी को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों को कड़ा सबक सिखाते हुए पुलिस ने क्षेत्र में जुलूस निकाला।

बालिकाओं को नशे से दूरी की जानकारी

इंदौर। नशे से दूरी है जरूरी अभियान के साथ पुलिस बालिकाओं को सुरक्षा को लेकर भी गंभीर है। क्षेत्रों, स्कूल, कॉलेज, छात्रावासों तक पहुंचकर सुरक्षा की जानकारी दी जा रही है। इस क्रम में पुलिस आयुक्त संतोष सिंह, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त आरके सिंह एवं पुलिस उपायुक्त (यातायात) राजेश कुमार त्रिपाठी के मार्गदर्शन, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त विक्रम सिंह रघुवंशी ने शासकीय कस्तूरबा बालिका विद्यालय छात्रावास की बालिकाओं को सड़क सुरक्षा की जानकारी दी। इसके अलावा आत्म सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, बस, ऑटो रिक्शा, ई-रिक्शा में सफर के दौरान किन-किन बातों की सावधानियां रखना चाहिए के बारे में भी बताया। नशे से दूरी है जरूरी 2.0 अभियान के बारे में छात्राओं से चर्चा कर उनकी सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस के हेल्पलाइन नंबर की जानकारी साझा की। इस दौरान बालिकाओं में भी उत्साह देखा गया। अंत में उनसे प्रश्न पूछने पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी गई। राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रभारी एवं कस्तूरबा छात्रावास की वार्डन गायत्री शुक्ला द्वारा ट्रैफिक पुलिस के जागरूकता कार्यक्रमों की सराहना व्यक्त की गई।

साले और साढू ने जीजा को पीटा

इंदौर। राजीनामा नहीं कराने पर साले और साढू ने जीजा के साथ मारपीट की। आजाद नगर पुलिस के अनुसार मूसाखेड़ी निवासी फरियादी सुदीप पिता रघुवीर बघेल ने बताया कि उनका साला पवन पूर्व में किसी आपराधिक मामले में जेल गया था। जेल से छुटने के बाद वह मुझ पर राजीनामा करवाने का दबाव बना रहा था। मैंने राजीनामा कराने में असहमति जताते हुए कहा कि इस मामले में कुछ नहीं कर सकता तो पवन और उसका साढू मुकेश दोनों निवासी चौधरी पार्क मूसाखेड़ी रंजिश रखने लगे। बुधवार को मुझे आरोपियों को अकारण रोका और गाली-गलौज की। जब मैंने गालियां देने से मना किया तो दोनों ने मारपीट की।

बंद फ्लैट पर चोरों का धावा

इंदौर। पुलिस की रात्रि गश्त को धता बताते हुए चोरों ने बंद फ्लैट पर धावा बोल दिया। चोर यहां से लाखों के जेवर और नकदी लेकर भाग निकले। तिलक नगर पुलिस को फरियादी अमरेश कुमार रमेश दत्त मिश्र निवासी प्राइड पैलेस अपार्टमेंट गोयल नगर ने बताया कि वह कुछ दिन से ताला लगाकर घर से कहीं गए थे। इसी दौरान अज्ञात बदमाशों ने उनके फ्लैट का ताला तोड़ा और वहां से चांदी का इत्रदान, चांदी की प्लेट, तीन चांदी की अंगूठियां, दो जोड़ी चांदी की पायल, चांदी की सिंदूरदानी और दो जोड़ी सोने की बालियां चुरा ली। बदमाश अलमारी में रखे रुपए भी बटोर ले गया, जिसमें 100 रुपए, 50 रुपए, 10 रुपए और 1 रुपए के नोटों की गड्डियों समेत करीब 3100 रुपए के सिक्के और अन्य खुले नोट शामिल हैं। पुलिस ने अज्ञात चोरों पर केस दर्ज कर लिया है।

11 मकान अतिक्रमण मुक्त कराए गए

इंदौर। इंदौर विकास प्राधिकरण की अनदेखी के चलते योजना क्रमांक 114 के अंतर्गत आने वाले राजीव आवास विहार के 11 मकान अतिक्रमण की जद में आ गए थे। शिकायत के बाद शुक्रवार को प्राधिकरण ने कड़ी फैसला लेते हुए अतिक्रमण की जद में आए मकानों को मुक्त करा दिया। प्राधिकरण मुख्य कार्यपालिक अधिकारी डॉ. परिक्षित झाडे ने बताया कि कार्रवाई के दौरान 11 अतिक्रमित आवासीय परिसरों (रो-हाउस) पर लंबे समय से कतिपय लोगों ने कब्जा जमा रखा था। इन मकानों का वर्तमान बाजार मूल्य ?1 करोड़ रुपए से अधिक है। उल्लेखनीय है कि राजीव आवास विहार में लगभग 1000 से अधिक आवासीय प्रकोष्ठों का व्ययन प्राधिकारी द्वारा किया गया है। यह कार्रवाई पुलिस के सहयोग से शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुई। झाड़े ने स्पष्ट किया कि किसी भी संपत्ति पर किसी भी प्रकार का कब्जा स्वीकार नहीं किया जाएगा। ऐसे मामलों में आगे भी वैधानिक कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी।

सुगम यातायात की कवायद, हाई कोर्ट की कमेटी को व्यावहारिक सुझाव सौंपे

इंदौर। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्देश पर बनी 'ट्रैफिक रेगुलेटरी कमेटी' को शहर और आसपास की सड़कों पर गाड़ियों की आवाजाही को बेहतर बनाने के लिए एक विस्तृत सुझाव पत्र सौंपा गया। समिति सदस्यों ने इन सुझावों पर सकारात्मक रुख अपनाते हुए इन्हें संबंधित सक्षम अधिकारियों के समक्ष रखने का आश्वासन दिया है, ताकि इंदौर की जनता को जल्द से जल्द राहत मिल सके। एक जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान गठित इस समिति के सदस्य और वरिष्ठ अधिवक्ता विनय झैलावत व अधिवक्ता विवेक पटवा को यह प्रतिनिधित्व दिया गया। सुझाव सौंपने के अवसर पर वरिष्ठ अधिवक्ता एससी बागड़िया और विशाल बाहेती सहित कई कानून विशेषज्ञ उपस्थित रहे। इन सुझावों में सड़कों पर गाड़ियों का दबाव घटाने और सड़क सुरक्षा को पुख्ता करने के लिए एएनपीआर कैमरों और ई-चालान जैसी तकनीक के इस्तेमाल पर जोर दिया गया है। बार-बार रेड लाइट तोड़ने, गलत दिशा में गाड़ी चलाने, तेज रफ्तार और अवैध पार्किंग करने वालों पर शिकंजा कसने के लिए चालान को सीधे फास्टैग, डिजिटल पेमेंट सिस्टम और वाहन बीमा रिन्यूअल से जोड़ने की बात कही गई है। लोगों की सहूलियत के लिए चालान के साथ फोटो या वीडियो प्रमाण देने और ऑनलाइन सुनवाई की व्यवस्था बनाने का प्रस्ताव भी रखा गया है।

आधुनिक तकनीक और कड़े नियमों और से रुकेगा यातायात उल्लंघन

सर्विस लेन की नई व्यवस्था

चौराहों पर सिग्नल से बचने के लिए लोग अक्सर सर्विस लेन का गलत इस्तेमाल करते हैं, जिससे दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है। इसे रोकने के लिए वैज्ञानिक तरीके से एंट्री और एग्जिट तय करने, बैरियर लगाने, वनवे व्यवस्था लागू करने और सीसीटीवी कैमरों से निगरानी का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त नगर निगम और यातायात पुलिस की संयुक्त टीमों द्वारा सड़कों व फुटपाथों से अतिक्रमण हटाने के लिए अभियान चलाने की सिफारिश की गई है। दुकानदारों व वेंडर्स के लिए अलग से वेंडिंग ज़ोन बनाने की बात भी कही गई है, ताकि पैदल यात्रियों को सुरक्षित रास्ता मिले।

लाइव डेटा से पुलिस तैनाती - यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए केवल उन्हीं स्थानों पर पुलिस बल तैनात करने का सुझाव दिया गया, जहां वास्तव में जाम या हादसे का खतरा अधिक रहता है। इसके लिए कमांड एंड कंट्रोल सेंटर से मिलने वाले लाइव डेटा की मदद ली जाएगी। इसके साथ ही %इंदौर ट्रैफिक साथी% मोबाइल ऐप को आईटीएमएस से जोड़कर अधिक उपयोगी बनाने का विचार रखा गया है, ताकि चालकों को जाम, सिग्नल की स्थिति और अपने चालानों की जानकारी तुरंत मिल सके।

अच्छे चालकों को प्रोत्साहन

सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए नागपुर के 'ट्रैफिक रिवार्ड्स' मॉडल की तर्ज पर नियम मानने वाले चालकों को रिवॉर्ड पॉइंट देने और इंश्योरेंस प्रीमियम में छूट जैसी प्रोत्साहन योजना शुरू करने का सुझाव दिया गया है। मिजोरम के आइजोल शहर की तर्ज पर खुद से नियम मानने का संस्कार विकसित करने के लिए स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलाने की सिफारिश की गई। इंदौर के यातायात को विश्वस्तरीय बनाने के लिए चेन्नई, बेंगलुरु के साथ-साथ स्वीडन, नीदरलैंड और नॉर्वे जैसे देशों के सफल ट्रैफिक प्रबंधन का अध्ययन कर उन्हें चरणबद्ध तरीके से लागू करने की बात कही गई है।

रेलवे स्टेशन पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित

इंदौर। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के अंतर्गत इंदौर रेलवे स्टेशन पर स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 30 जून, 2026 को समाप्त तिमाही बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता क्षेत्र अधिकारी हरि राम मीणा ने की। इस दौरान इंदौर स्टेशन परिसर में संचालित विभिन्न रेलवे कार्यालयों के प्रमुखों ने भाग लेकर अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के उपयोग, प्रगति और प्रचार-प्रसार की जानकारी प्रस्तुत की। बैठक में अध्यक्ष मीणा ने सभी कार्यालयों में राजभाषा से जुड़े कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों का पूरी गंभीरता से पालन सुनिश्चित किया जाए तथा कार्यालयीन कार्यों, पत्राचार और दैनिक प्रशासनिक गतिविधियों में हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग किया जाए। बैठक में सहायक वाणिज्य प्रबंधक वसंत नायर, जनसंपर्क अधिकारी मुकेश कुमार तथा रतलाम मंडल के राजभाषा विभाग से राजेन्द्र सेन सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने अपने-अपने विभागों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी साझा की। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के जनसंपर्क अधिकारी मुकेश कुमार द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार बैठक के बाद अधिकारियों और कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति जागरूकता तथा व्यावहारिक दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से राजभाषा प्रश्न मंच और हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। कार्यशाला में कार्यालयीन कार्यों का प्रभावी निष्पादन, हिंदी में पत्राचार तथा राजभाषा से जुड़े विभिन्न प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में आगामी राजभाषा पखवाड़ा को पूरे उत्साह, व्यापक सहभागिता और जनभागीदारी के साथ आयोजित करने का निर्णय लिया गया। साथ ही कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा राजभाषा संबंधी गतिविधियों के आयोजन पर भी सहमति व्यक्त की गई। इससे कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देने की दिशा में सकारात्मक पहल की जाएगी।

हिंदी के अधिक प्रयोग पर जोर, राजभाषा पखवाड़ा मनाया जाएगा

रिटायर्ड अधिकारी के खाते से 51 हजार निकले, मैसेज से पता चला

पुलिस ने अज्ञात ठग पर केस दर्ज कर तलाश शुरू की

इंदौर। ठग इतने शातिराना अंदाज में वारदात को अंजाम देने लगे हैं, कई दिनों तक पीड़ित को पता नहीं चल पाता है। ठग बिना किसी ओटीपी से बैंक खाते से पैसे निकालने लगे हैं। ऐसा ही एक मामला ईपीएफओ विभाग के रिटायर्ड अधिकारी के साथ हुआ। उनके खाते से बदमाश ठग ने 51 हजार रुपए निकाल लिए। जब अधिकारी के पास मैसेज आया तो उसे पैसे निकाले जाने जा पता चला। कनाड़िया पुलिस को फरियादी रामवृक्ष उइके ने बताता कि उनका बैंक खाता जीपीओ स्थित शाखा में संचालित है। पिछले कुछ समय से उनकी बिना जानकारी और अनुमति के उनके बैंक खाते से यूपीआई के माध्यम से अनजान खातों में लगातार रुपए ट्रांसफर किए जा रहे थे। मामले का खुलासा तब हुआ जब पीड़ित अपनी पासबुक और खाते का स्टेटमेंट लेने बैंक शाखा पहुंचे। बैंक प्रबंधक ने जब उनके खाते का रिकॉर्ड खंगाला तो पता चला कि 26 मार्च को सबसे पहले गूगल पे के जरिए 5 हजार रुपए किसी अज्ञात खाते में ट्रांसफर किए गए थे। इसके बाद सोनू नामक व्यक्ति के खाते में 17 हजार रुपए भेजे गए। सिलसिला यहीं नहीं रुका, बैंक रिकॉर्ड के मुताबिक, 13 जून को अमन साहू नामक व्यक्ति के खाते में 15 हजार रुपए और फिर 11 जुलाई को उसी खाते में 14 हजार रुपए की रकम दोबारा ट्रांसफर की गई। पुलिस ने अज्ञात ठग पर केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

मालवा मिल में गणेश उत्सव की तैयारी, झांकी निर्माण स्थल के पूजन से शुरू

मुख्य झांकी का निर्माण प्रसिद्ध झांकी कलाकार राकेश वर्मा करेंगे

इंदौर। मालवा मिल श्री गणेशोत्सव समिति ने इस वर्ष के गणेश उत्सव की तैयारियों का शुभारंभ धार्मिक उल्लास के साथ किया। झांकी निर्माण स्थल पर वैदिक मंत्रोच्चार और पारंपरिक विधि-विधान से पूजन कर निर्माण कार्य की शुरुआत की गई। आयोजन में श्रद्धालुओं और समिति पदाधिकारियों ने भगवान श्री गणेश से सफल एवं भव्य आयोजन की कामना की। पूजन समारोह में ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष योगेंद्र महंत, समाजसेवी मदन परमालिया और पूर्व पार्षद रमेश उस्ताद मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। समिति के अध्यक्ष कैलाश कुशवाह एवं कोषाध्यक्ष सुरेन्द्र शर्मा ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी श्रद्धालुओं के लिए आकर्षक और संदेशपरक झांकी तैयार की जाएगी। कार्यक्रम में मिल मैनेजमेंट से जेएम सिकरवार, विनोद जैन, मधुरम स्वीट्स के गोपाल शर्मा सहित अनेक गणमान्य नागरिकों ने सहभागिता की। पूजन की विधि पंडित सुरेन्द्र शर्मा ने संपन्न कराई। इस अवसर पर समिति के प्रधानमंत्री राजेंद्र मरमट, संतोष वर्मा, समाजसेवी देवीलाल गुर्जर, विजय जाधव,

राजेश गुर्जर और संजय सिंह भदौरिया सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में संतोष यादव, जवाहर शर्मा, सुरेश गहलोत, राजकुमार वर्मा, करण मकवाना सहित अन्य सदस्यों ने भी आयोजन की सफलता के लिए प्रार्थना की। समिति ने बताया कि इस वर्ष की मुख्य आकर्षण झांकी का निर्माण प्रसिद्ध झांकी कलाकार राकेश वर्मा करेंगे, जबकि झांकी को आकर्षक और भव्य स्वरूप देने के लिए विद्युत सज्जा का दायित्व श्याम बुर्रा और आशीष बुर्रा को सौंपा गया है। समिति का दावा है कि इस बार की झांकी धार्मिक आस्था के साथ आधुनिक कलात्मक प्रस्तुति का भी अनूठा संगम होगी और गणेशोत्सव के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आकर्षित करेगी।

निगम में 3 लाख के वेतन घोटाले का खुलासा, दो बर्खास्त, केस दर्ज होगा

पांच मस्टर कर्मियों के बैंक खाते बदलकर अनाधिकृत खाते में राशि

इंदौर। नगर निगम इंदौर में मस्टर कर्मचारियों के वेतन भुगतान में करीब तीन लाख रुपए के वित्तीय गबन का मामला सामने आया है। इस मामले में दो कर्मचारियों की सेवाएं समाप्त कर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए गए हैं। बताया गया कि पांच मस्टर कर्मचारियों के बैंक खातों में कथित रूप से छेड़छाड़ कर उनके वेतन की राशि एक अनाधिकृत बैंक खाते में ट्रांसफर किए जाने का खुलासा होने पर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने तत्काल सख्त कार्रवाई की। पिछले माह मस्टर कर्मचारियों के वेतन भुगतान के दौरान एनईएफटी बैंक फाइल असफल होने पर लेखा विभाग ने भुगतान प्रक्रिया की जांच की। जांच में पता चला कि प्रधान कार्यालय की स्थापना शाखा में कार्यरत पांच मस्टर कर्मचारियों के बैंक खाते बदल दिए गए थे, जिसके कारण

उनके वेतन की राशि गलत और अनाधिकृत खाते में चली गई। प्रारंभिक जांच में स्थापना शाखा में कार्यरत उच्च कुशल श्रमिक अमन सालवी को प्रथम दृष्टया दोषी पाया गया। आरोप है कि उन्होंने कर्मचारियों के बैंक खातों में बदलाव कर निगम को आर्थिक नुकसान पहुंचाया। खुलासे के बाद उन्हें तत्काल कार्यमुक्त कर दिया गया, उनका पारिश्रमिक रोक दिया गया तथा कर्मचारी आईडी भी लॉक कर दी गई।

जांच के दौरान आईटी विभाग के आउटसोर्स कर्मचारी अनुज पंवार की भूमिका भी सामने आने पर उनकी सेवाएं भी तत्काल प्रभाव से समाप्त कर दी गई। निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने कहा कि निगम की राशि में किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता या गड़बड़ी को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने दोनों आरोपित कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर कानूनी कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। निगम प्रशासन के अनुसार पूरे मामले की विस्तृत जांच जारी है और यदि अन्य किसी की संलिप्तता सामने आती है तो उसके खिलाफ भी कठोर कार्रवाई की जाएगी।

साधना नगर में कोचिंग की बिल्डिंग पर बवाल, नक्शे से ज्यादा निर्माण

इंदौर। शहर के साधना नगर में एक निर्माणाधीन व्यावसायिक भवन को लेकर स्थानीय रहवासियों ने नगर निगम पर सवाल उठाए हैं। क्षेत्रवासियों का आरोप है कि निगम से स्वीकृत नक्शे के विपरीत भवन का निर्माण किया जा रहा है। इसे लेकर रहवासियों ने निगम आयुक्त को लिखित शिकायत सौंपते हुए तत्काल जांच और कार्रवाई की मांग की है। स्थानीय नागरिक राजेश बिजवे के नेतृत्व में दिए गए शिकायत पत्र में बताया गया कि विधानसभा क्षेत्र क्रमांक-1 के वार्ड क्रमांक-4 स्थित साधना नगर के मकान नंबर-28 पर 30म50 फीट (1500 वर्ग फीट) के आवासीय प्लॉट पर निगम से तीन मंजिला भवन की अनुमति ली गई थी। आरोप है कि मौके पर पूरे प्लॉट पर कमर्शियल कोचिंग क्लास के लिए निर्माण किया जा रहा है, जो स्वीकृत नक्शे और भवन अनुमति की शर्तों के विपरीत है। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि निर्माण में न तो पार्किंग के लिए निर्धारित स्थान छोड़ा गया है और न ही ग्रीनरी के लिए आवश्यक जगह रखी गई है। इससे भविष्य में क्षेत्र में यातायात और पार्किंग की गंभीर समस्या खड़ी हो सकती है।

रहवासियों का यह भी आरोप है कि पिछले एक वर्ष से संबंधित अधिकारियों को मौखिक शिकायत की जा रही हैं, लेकिन अब तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई, जबकि निर्माण लगातार जारी है। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि भवन मालिक विरोध करने वाले रहवासियों को धमकाते हुए कहता है कि जो करना है कर लो, हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। राजेश बिजवे ने कहा कि यदि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई तो भविष्य में क्षेत्र में विवाद और अव्यवस्था की स्थिति बन सकती है। शिकायत पर मनीष कोठारी, भूपेंद्र वर्मा, दिनेश होलकर, मुकेश होलकर, नीलेश मोदी सहित कई रहवासियों के हस्ताक्षर हैं। सभी ने निगम आयुक्त और महापौर से मामले की निष्पक्ष जांच कर नियमों के विरुद्ध हुए निर्माण पर वैधानिक कार्रवाई करने की मांग की है।

विचार

रविकान्त राऊत

अगर बादलों ने 'अनुबंध' तोड़ दिया ?

बरगद ने बादलों से पूछा, 'इस बार इतनी देर क्यों की भाई? खैर, नीचे देखो, इंसान ने तुम्हारी बूंदों को समेटने वाले सारे तालाबों पर मॉल खड़े कर दिए हैं। तुम्हारे ठहरने की जगह ही नहीं बची।' काले स्याह घने बादल ने गरजकर कहा, 'हम देर से नहीं आए हैं, हम बस सोच रहे थे कि इस बार बरसें या सिर्फ चेतावनी देकर चले जाएं। सदियों से हम अपनी पूरी वफादारी से इस धरती की कोख हरी करते आए हैं। लेकिन आजकल हम देख रहे हैं कि इंसान केवल पानी चाहता है, मानसून नहीं। वह बारिश की बूंदें तो चाहता है, लेकिन उन बूंदों को सहेजने वाली ज़मीन को कत्ल कर देना चाहता है।'

इस बार आषाढ़ की आखिरी रात को जब आसमान में गड़गड़ाहट हुई, तो वह हमेशा जैसी संगीत-मयी ध्वनि नहीं थी। वह प्रकृति का कोई पुराना राग नहीं, बल्कि एक अंतिम नोटिस जैसा था।

हम सदियों से एक मुगालते में जी रहे थे। हमारा मानना था कि जुलाई आते ही बादलों का कर्तव्य है कि वे आएं, हमारी बोई हुई कंक्रीट की इमारतों पर बरसें, हमारी सूखी नदियों को थोड़ा सा जीवनदान दें और चले जाएं। हमने मान लिया था कि वर्षा ऋतु हमारे ऐशो-आराम, हमारी रील-कहानियों और हमारी खिड़की से दिखने वाले रोमांटिक 'व्यू' की गुलाम है।

लेकिन इस बार, पहली बारिश की बूंद जब शहर की चौबीसवीं मंजिल की बालकनी पर गिरी, तो उसमें मिट्टी की सोंधी खुशबू नहीं थी। उसमें एक अजीब सा सन्नाटा था।

शहर के बीचों-बीच खड़े सौ साल पुराने बरगद के पेड़ ने, जिसे मेट्रो की नई लाइन के लिए अगले हफ्ते काटा जाना था, उस रात आसमान से बात की। यह संवाद किसी ने नहीं सुना, सिवाय उस एकांतप्रिय लेखक के जो उसकी छांव तले बैठा अपनी डायरी में 'वर्षा' पर एक रूढ़िवादी कविता लिखने की कोशिश कर रहा था।

बरगद ने बादलों से पूछा, 'इस बार इतनी देर क्यों की भाई? खैर, नीचे देखो, इंसान ने तुम्हारी बूंदों को समेटने वाले सारे तालाबों पर मॉल खड़े कर दिए हैं। तुम्हारे ठहरने की जगह ही नहीं बची।'

काले स्याह घने बादल ने गरजकर कहा, 'हम देर से नहीं आए हैं, हम बस सोच रहे थे कि इस बार बरसें या सिर्फ चेतावनी देकर चले जाएं। सदियों से हम अपनी पूरी वफादारी से इस धरती की कोख हरी करते आए हैं। लेकिन आजकल हम देख रहे हैं कि इंसान केवल पानी चाहता है, मानसून नहीं। वह बारिश की बूंदें तो चाहता है, लेकिन उन बूंदों को सहेजने वाली ज़मीन को कत्ल कर देना चाहता है।'

यह वर्षा ऋतु का एक बिल्कुल नया चेहरा था। ऐसा लगा जैसे, इस बार बारिश इंसानी इच्छाओं की पूर्ति के लिए नहीं, बल्कि अपना हिसाब मांगने आई थी।

आज का मानव कितना अजीब है। जब पहली फुहार पड़ती है, तो वह खिड़की बंद कर लेता है। वह वातानुकूलित कमरों में बैठकर 'हैप्पी मानसून' का स्टेटस डालता है, लेकिन उसी मानसून की बाढ़ से बेघर होते जंगलों और बेजुबान जानवरों की चीखें उसके कानों तक नहीं पहुँचतीं। हमने 'जल-चक्र' को सिर्फ किताबों का हिस्सा बना दिया और जल-संकट को एक हेडलाइन।

पर प्रकृति का नियम बड़ा साफ़ है, यहां सृजन और संरक्षण साथ-साथ चलते हैं। अगर आप सृजन करने वाली कोख (चाहे वह धरती हो, नदी हो या स्त्री) का सम्मान नहीं कर सकते, तो आपके हिस्से के 'सावन' का बंजर होना तय है।

हम बारिश के पानी को 'ड्रेनेज' (नाली) का रास्ता दिखाते हैं और फिर बोतलों में बंद पानी को रुपए देकर खरीदते हैं। प्रकृति हमारी इस नासमझी पर हर बार दहाड़ती है और हम समझते हैं कि बिजली कड़क रही है।

इस बार, जब आपके शहर में बारिश हो, तो ज़रा अपनी बालकनी की छतरी से बाहर निकलिए। अपने हाथ फैलाकर उस पानी को महसूस कीजिए और खुद से पूछिए– 'क्या हम इस बारिश के हकदार हैं?'

वर्षा ऋतु महज़ एक मौसम नहीं है, यह ईश्वर द्वारा हर साल धरती को भेजा जाने वाला एक प्रेम-पत्र है। लेकिन याद रखिए, अगर प्रेम-पत्रों का जवाब सिर्फ उपेक्षा से दिया जाए, तो डाकिया एक दिन रास्ता बदल लेता है। बादलों के रास्ता बदलने से पहले, आइए हम अपनी सोच का रास्ता बदलें।

कविताएं

राजकुमार कुम्भज की दो कविता?

क्या गजब दिन हैं बारिश के

क्या गजब दिन हैं बारिश के
बरसता पानी भी सुलगाता है आग
अपने शहर से दूर बहुत दूर भटकता हूँ मैं
ताज़ा अख़बार में अपने जूते लपेटे हुए
घर से बेघर हो गए ग़रीब लोगों के चेहरे
और ख़बरें बाढ़ के क़हर की पढ़ते हुए
कहीं-कहीं तो पूरे के पूरे गॉंव ही बह गए
कहीं-कहीं बच गए मंदिर,मस्जिद,चर्च
डूब गई सब्ज़ी-मंडी,बच गया सर्राफ़ा
स्कूल-कॉलेज रहे नहीं,रह गये चकलाघर
शराबख़ाने,क़साईख़ाने,जुआख़ाने बच गए
बचे नहीं पुस्तकालय और न्यायालय कहीं
हर जगह परदा है,पहरा है,पॉलिटिक्स है
पूछता नहीं,कोई भी पूछता नहीं बारिश से
कि बता दरअसल तेरी पॉलिटिक्स क्या है
घर और शहर के फ़ासले का माजरा क्या है
रोज़ा रक्खें,न रक्खें वाक़ई ज़रुरी तो है नहीं
मगर कमबख़्त रोज़ा-इफ़्तारी है जरुरी
लोग क्या कहेंगे,डरता रहता हूँ इसी मर्ज़ से
नॅंगा ही कर रहा है देवताओं को भी नॅंगा
पहली बारिश का स्नान मिटा देता है ख़ाज़
क्या ग़ज़ब दिन हैं बारिश के?

बारिश का अनुवाद हैं स्त्रियॉं

बारिश का अनुवाद हैं स्त्रियॉं
बूॅंदें लिख रही हैं परिभाषा, उनकी
पानी ही अद्वितीय अलंकार है स्त्रियों का
गरजता-बरसता रहता है उनका व्याकरण
आलोचना की अंतिम अधिकृत व्याख्या वे
घनघोर काली घटाओं का गर्जन-नर्तन वे
वे ही बाढ़,वे ही खेतों में अन्न का अर्थ भी
नदियों का प्रवाह वे,समुद्र का प्रलय भी वे
जॅंगलों की हरियाली का आचरण उन्हीं से
बारिश का रौद्र सॅंगीत हैं।

पश्चाताप की एक नई

लघुकथा

आसिम अनमोल

रचना हाँफते और रोती हुई घर में जैसे ही घुसी। घर के सभी सदस्यों की अचरज भरी नज़रें उस पर पड़ी। क्यों कि रचना छुट्टियों में मायके रहकर ससुराल गई थी। माँ बेचैन होकर उसको कलेजे से लगाते हुए बोली बेटा क्या हुआ कोई बात हो गई क्या। रचना माँ को देखते हुए फफ़ककर फिर रोने लगी। बेटा कुछ तो बोलो हुआ क्या है। रचना खुद को संभालते हुए बोली। मैंने इनसे स्मार्ट फ़ोन दिलवाने के लिए क्या कह दिया। इन्होने पूरा घर सिर पर उठा लिया। मुझे खूब चिल्लाए। कहने लगे मेरा बजट नहीं है। मैं अभी मोबाइल नहीं दिलवा पाऊंगा। रहना है रहो नहीं तो अपने घर जाओ। इस बात पर मुझे खूब रोना आया। और हम चले आए। माँ ने बेटी की नादानी भरी जब यह कथा सुनी तो माँ न तो गुस्से में आई। न ही माँ ने उसकी बात को सही ठहराया। बल्कि उसको एक सामाजिक संदेश देते और समझाते हुए कहा। बेटा यह तुमने कोई अच्छा काम नहीं किया। एक मोबाइल के लिए तुम अपने पति परमेश्वर को छोड़कर मायके चली आई। सोचों उसके दिल पर क्या गुज़र रही होगी। क्या सोच रहा होगा तुम्हारे और हमारे घर के संस्कारों के बारे में। बेटा पति की जितनी आय होती है उसी में गुज़ारा करने वाली औरत को समाज में अच्छा कहा जाता है। दिखावों से सिर्फ़ कुंठाएँ जन्म लेती हैं। जीवन में सुख नहीं मिलते। मुझसे पूछो तुम्हारे पिता की छोटी सी आमदनी में हमने तुम लोंगो को कैसे पाला। क्या क्या नहीं सहा। कितने अरमानों का गला घोटा। लेकिन तुम्हारे पिता के आगे कभी जुवान नहीं खोली। सामाजिक प्रतिष्ठा और परिवार की ख़ुशी के लिए सबको खुश रखना ही औरत का धर्म होता है। बेटी यह बातें सुनकर फिर माँ को चिपटकर रोने लगी। इस बार रचना की आँखों से गिर रहे आँसू पश्चाताप की एक नई कहानी गढ़ते हुए एक शादी शुदा रिश्ते को मजबूती प्रदान कर रहे थे।

नेता पर सरल सुलेख

हास्य-व्यंग्य

सुरेश सौरभ

दिन निकला। सूरज उगा। नेता झटपट उठ। काम पर लग। खटपट-खटपट मत कर। सरपट-सरपट सफाई अभियान पर लग। खुले में शौच मत जा। फिरी वाले शौचालय में जा। फिर नल पर चल। कपड़े दादा की चौकी पर धर। टप से मलमल नहा। किसी के साथ मत नहा, न उसके साथ पिक्चर बना। नहा कर खादी पहन। मेअकप कर। झोला उठा। झोले में झूठ-छ्ल-कपट धर। फिर झोला उठा कर वरचुअल रैली पर चल। माइक साध। जोकर बन या जादूगर बन, नाटक कर। 'भाइयों और उनकी बहनों आप का यह सेवक,खाली झोला यह लेकर आया हैं। आप सब लोगों की कसम खाकर कहता है कि आप लोगों की खूब सेवा करने के बाद आप का यह अदना सेवक बस यह अपना यही खाली झोला उठा कर चला जायेगा। मैंने देश के लिए अपना सब कुछ छोड़ा। अब आप सब मुझे सेवा का अवसर दें।' फिर रंगा सियार बन। जनता को अपने झोले के उस जादू से फंसा। जात-धरम में सबको उलझा। मंदिर-मस्जिद में सबको लड़ा। गाय-बैल के कोल्हू में बांध जनता को खूब नचा। हर बूथ पर अपने यूथ लगा। बूथ पर कब्जा जमा। चुनाव जीत। फिर विधायक-एमएलसी खरीद कर मंत्री-मुख्यमंत्री बन। चाहे ऐसे, चाहे वैसे या फिर चाहे जैसे बस कुरसी पा। लाल बत्ती से भौकाल बना। फिर जनता का खूब धन चूस। अकूत धन कमा। भोंपू मीडिया खरीद। खुद को देव, दानव, मानव सबका नेता बताता चल। फिर सब चैनल पर बता, 'जनता सारी खुश। सब खा रही दूध-भात। हवाई चप्पल वाले लेबरों लिए है हवाई जहाज। सारी नदियां साफ। सारी देश की गालियां साफ। बेकारी हुई फुर्र। कहीं न पेपर लीक, कहीं नहीं प्रदूषण, न कहीं गरीबों का शोषण। न कहीं किसी सीमा पर विदेशियों का अतिक्रमण। सब सुखी। सब सम्पन्न, ऐसा अपने मन की बात में सारी दुनिया को बता। मजबूती से जता। तब न होगी तेरी कोई खता। न होगा तुझसे कोई जुदा। सब मानेंगे तुझे खुदा।

नवगीत

किसको कैसे पहचानें

मोहन वर्मा

चेहरे पर चेहरे देखें या फिर, दिल की बातें जानें
अजब समय की उलझन है ये किसको कैसे पहचानें
उसके दिल में अपनी ख़ातिर
क्या अब भी कुछ बाकी है ?
किससे पूछें,कौन बताए,
वो जानें या रब जानें
पत्थर जैसी इस दुनिया में
शीशे जैसे, लोग बसे-
किरचे-किरचे रोज बिखरते
कैसे बचना ना जानें
क्या कीजे इस भावुक दिल
और सपनों वाली आंखों का-
नये समय और नई रीत से
ये अब तक हैं अंजाने
बिना खता की सजा भुगतते
किससे क्या फ़रियाद करें-
चाहत के बदले मिली हिकारत
रखते हैं हम सिरहाने
चेहरे पर चेहरे देखें या फिर दिल की बातें जानें
अजब समय की उलझन है ये किसको कैसे पहचानें।

वक्रोक्ति

– मुकेश राठौर

बात और खाने का संबंध

अपनी बात मनवाने के लिए खाने से इनकार करना कोई नई बात नहीं7बात सही है या गलत ये बाद की बात है7कोई खाकर भी गलत बात मनवा लेता है तो कोई हफ्तों भूखों मर कर भी सही बात नहीं मनवा पाता7वैसे सही बात देर से समझ आती है,कई बार कहने वाले के न रहने के बाद7बात का क्या है?कोई बात किसी के लिए सही तो किसी के लिए गलत हो सकती है7आदमी का स्वभाव है वह अपनी बात को ही सही मानता है7बकलम मरहूम शायर राहत इंदौरी हमारे मुंह से जो निकले वही सदाकत है...7एक बात तो है बात और खाने का बहुत गहरा रिश्ता है7बात के धनी लोग खाने की चिंता नहीं करते,तो खाने वाले बात की7सीधी सी बात यह कि जिन्हें बात देखनी है वो खाना भूल जाए और जिन्हें खाने से मतलब है वो बात7सियासत में इन दो बातों का बड़ा महत्व है7इधर बात भी जरूरी है और खाना भी7जो सिर्फ बात पर गए वो काम से गए7जो खाने के पीछे दौड़े उनकी बात बन गई7ये बात और है कि टिकट की बात पर दिक्कत दोनों को जाती है क्योंकि जनता के बीच बात बनाने वाले की जुबान तकलीफ देती है तो खाने वाले का पेट7महज पेट की वजह से बात टिकट कटने पर आ जाए तो कुछेक पेट वाले राजधानी पहुंच पेट वालों से पेट वाले का टिकट कटवा ही लाते हैं जो काम सैकड़ों बात वाले बात वाले के लिए नहीं कर पाते7

हमें बचपन से सिखाया जाता है खाते समय बात नहीं करनी चाहिए,इससे ठसका बैठने या फिर हिचकी लगने का डर रहता है7मगर हम है कि हमें खाने के वक्त जमाने भर की बातें याद आती हैं बच्चों की पढ़ाई की,मां की दवाई की,बीवी की दुबलाई की,खुद की कमाई की और बढ़ती महंगाई की...उधर सियासतदां खाते वक्त सिर्फ खाने की बात करते हैं7मज़े की बात उन्हें न कभी ठसका बैठता और न मतदाताओं द्वारा याद किए जाने की हिचकी आती7हमें ठसका बैठता है7खों-खों खांसते हमारे आंसू निकल जाते हैं और उधर वो राम जी को थैंक्यू बोल दांत साफ करते छोटी नींद निकालने सोफे पर पसर जाते हैं7

जब देश में राजतंत्र था प्रजा को अपनी बात कहने का अधिकार नहीं था7इधर-उधर खाने का भी नहीं7खुश होइए कि आज देश में प्रजातंत्र है7आज प्रजा को तंत्र से न सिर्फ अपनी बात रखने बल्कि खाद्य सुरक्षा का भी अधिकार मिला हुआ है7आप बाकायदा अपनी बात कर सकते हैं7जिम्मेदारों द्वारा बात न सुने या कहे जाने पर भूख हड़ताल भी7गोरों से बात मनवाने के लिए गांधीजी ने भी भूख हड़ताल को हथियार बनाया था7वे जब-जब भूख हड़ताल पर उतरे,गोरों की भूख मर गई और फिर एक दिन गोरे भी7अब देश में न तो गोरे रहे न गांधीजी7हां भूख और भूख हड़ताल अब भी7बहरहाल,सिस्टम आपकी बात सुने न सुने लेकिन आप भूख हड़ताल पर रहते हुए भूख से मरने का रास्ता चुने यह कतई मंजूर नहीं7बताकर आप लाख मरना चाहे तो किसी भी कीमत पर आपको मरने नहीं दिया जाएगा7बिन बताए भूखमरी से लोग मर जाते हैं ये और बात है7

ग़ज़ल

इरादा भी नहीं

कमलेश कुमार दीवान

जिस्म है जां है कुछ और इरादा भी नहीं
यूं ही इस राह में चलने का वादा भी नहीं।

मैं मुंतजिर भी नहीं उनकी आरजू भी नहीं
ये इल्तिज़ा है जो उम्मीद से ज़्यादा भी नहीं।

कोई क़रार से बेजार तो कोई बेकरार बहुत
शिकायतें हैं तो दूर करने का माद्दा भी नहीं।

बड़े सुकून से हम उम्र की कश्ती में चले
सफ़र लम्बा है और ये अभी आधा भी नहीं।

दीन दुनियां से क्यों अनजान रहा है 'दीवान'
जानता यह भी कि इंसान एक प्यादा भी नहीं।

और मां बेटी हंस पड़ीं

लघुकथा

कुसुम जैन

समीक्षक

चाय बनाती, सबको नाश्ता देती, फिर अपने लड्डु गोपाल की सुध लेती। उन्हें तैयार करती, पोशाक बदलती, भोग लगाती और तल्लीन होकर पूजा करती। फिर वही दोपहर का भोजन बनाना, कपड़े धोना?, बच्चों का कमरा? और चीजों को व्यवस्थित करना, इतने में शाम हो जाती। थोड़ा सा सुस्ता कर शाम के खाने में लग जाती। किसी का भी ध्यान इस ओर नही गया कि वह सुबह से रात तक रोबोट की तरह काम करती रहती है। कभी अपने बारे में सोचने का शायद उन्हें समय ही नही मिलता। सबको लगता कि वह अपनी इसी दुनिया में खुश है। उसकी बेटी रसिका अब बड़ी हो गई है। बारहवीं पास कर अपने कालेज जाने के? सपने बुन रही है। एक दिन उसका ध्यान माँ की रोबोट जैसी जिंदगी की ओर गया।

भावना एक कुशल गृहिणी है। सुबह 6 बजे से उठकर वह गृहस्थी के सारे काम बड़े मनोयोग से करती। सबसे पहले घर को व्यवस्थित बुहार कर, नल का समय हो जाने पर पानी भरती। चाय बनाती, सबको नाश्ता देती, फिर अपने लड्डु गोपाल की सुध लेती। उन्हें तैयार करती, पोशाक बदलती, भोग लगाती और तल्लीन होकर पूजा करती। फिर वही दोपहर का भोजन बनाना, कपड़े धोना , बच्चों का कमरा?और चीजों को व्यवस्थित करना, इतने में शाम हो जाती। थोड़ा सा सुस्ता कर शाम के खाने में लग जाती। किसी का भी ध्यान इस ओर नही गया कि वह सुबह से रात तक रोबोट की तरह काम करती रहती है। कभी अपने बारे में सोचने का शायद उन्हें समय ही नही मिलता। सबको लगता कि वह अपनी इसी दुनिया में खुश है। उसकी बेटी रसिका अब बड़ी हो गई है। बारहवीं पास कर अपने कालेज जाने के सपने बुन रही है। एक दिन उसका ध्यान माँ की रोबोट जैसी जिंदगी की ओर गया।

सोचने लगी- क्या माँ के अपने कोई सपने नही है क्या उनका अपना कोई शौक या हाबी नही है? मैंने उन्हें कभीहंसते-खिलखिलाते नही देखा। कभी कोई फरमाइश करते नहीं देखा। उन्हें इस जिंदगी से थोड़ा बाहर कैसे निकालूं? उन्हें अपने सपनों की याद कैसे दिलाऊं? कैसे बताऊँ कि इस छत के बाहर भी एक आसमां है, जहाँ खुशियों के पंख लगाकर उड़ा जा सकता है। उसने एक तरकीब सोची। उसने माँ के नाम एक पत्र लिखा-

प्रिय? माँ!

तुम बहुत अच्छी और प्यारी हो। माँ! मै तुम्हें रोज सुबह से शाम तक रोबोट की तरह काम करते देखती हूँ। आप अपने लिए जीना भूल गई है।माँ !मैं तुम्हें खिलखिला कर हंसते हुए देखना चाहती हूँ। रात को हम छत पर चलेगे, तारे देखेंगे और पूनम के चांद के साथ प्रकृति के वैभव को निहारेगे।

बहुत दिनों से आप छत पर भी नही गई है। और हाँ माँ! कल रविवार है। सुबह के नाश्ते और खाने मे मैं आपकी मदद करूँगी। फिर हम पापा के साथ शापिंग करेंगे। आपने भी बहुत दिनों से अपने लिए साड़ी नहीं खरीदी है। फिर सराफे की चाट का आनंद लेगे। घर के बाहर भी एक जिंदगी है। तैयार रहना माँ।

आपकी रसिका

रसिका ने वह पत्र माँ के तकिये के नीचे रख दिया। सुबह जब माँ ने तकिये के नीचे वह छोटा सा कागज देखा तो रसिका की लिखावट देख कर किसी अनहोनी की कल्पना से सिहर उठी। लेकिन पढना शुरू किया तो उनकी आंखों से खुशी के आंसू बह निकले। उन्होंने रसिका को आवाज दी और कस कर बाहों में भर लिया। दूसरे दिन शापिंग के बाद सराफा पहुंचे। वहाँ चाट के चटखारे के बाद जब भावना कुल्फी खा रही थी तो अतीत की यादों में खो गई और कुल्फी की डंडी को चाटती रही। माँ के चेहरे की संतुष्टि और आनंद में डूबे मन को रसिका ने हल्के से थपकी दी और बोलीं-

इस बेचारी डंडी को और कितना चाटोगी माँ। अब तो इसे छोड़ दो। और दोनों माँ-बेटी खिलखिला कर हंस पडी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com
'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

कलाकार नंदलाल बोस और मुंगेर की माटी

वैदिक युग में रथ बनाने वाले रथकार कहे जाते थे। कई जगहों पर रथ के अनेक-अनेक अंगों का वर्णन भी मिलता रहा है। धुरा, पहिया, जुआ, रथमुख आदि का भी जिक्र है। कलश, अमत्र (हांडी), ऊखा(कड़ाही), चमस आदि के उपयोग से एक समृद्ध गृहस्थी का परिचय भी मिलता है। गृहनिर्माण में प्रयोग होने वाली वस्तुओं के उल्लेख से भी बहुत सारी परतें खुलती हैं खैर परतें तो बहुत हैं जिसपर निरंतर अध्ययन की दरकार है फिलहाल वेदों की बात न करते हुए आज मैं महर्षि बाल्मीकि जी द्वारा रचित भगवान श्री राम के जीवन पर लिखित रामायण की बात करते हैं और देखते हैं कि वहाँ पर कला कहाँ-कहाँ और किस-किस रूप में दर्शित है। हालांकि पूरी बात इस एक आलेख में ही नहीं निकल पाएगी पर फिर भी शुरुआती बातें तो जरूर समेटने का प्रयास किया जाएगा।

कला, साहित्य समाज का आईना तो होता है पर एक कलाकार बन पाना इतना आसान नहीं जितना कि कुछ और, स्वतंत्रता पूर्व तो और भी नहीं था। कई लड़ाइयाँ एक साथ लड़नी पड़ती है एक इंसान को एक कलाकार बनने हेतु। नंदलाल बोस भी इन्हीं लड़ाकों में से थे। कलाकार बनने हेतु परिवार का बिल्कुल भी समर्थन नहीं था जबकि पढ़ना नंदलाल के बस में नहीं था बस किसी तरीके से ढो लेने वाली स्थिति में था, किसी तरीके से कुछ हद तक पढ़ाई कर सके पर आगे जाना मुमकिन नहीं हो पा रहा था जबकि कला रग-रग में थी पर संग कोई नहीं था। माई क्षेत्रमनी देवी एक गृहिणी थीं, जो घर के कामकाज के साथ ही नंदलाल के लिए खिलौने और गुड़िया भी बना लिया करती थीं। पूजा पंडालों को सजाने में भी बोस को बड़ा आनंद आता था। गाँव और आसपास के लोक शैली के चित्र, लोक पद्धतियाँ, कुम्हारों द्वारा बनी वस्तुएं भी आपको बहुत ही लुभाती थीं। आपमें रह-रह कर एक वेग सा उठ जाता था कलाकारी का और कहीं भी रेखाचित्र बनाने लग जाते थे। चोरी छिपे कला की बारीकियाँ भी सीखते रहते थे। ठंडी-ठंडी ओस की बूंदों से ढंकी सुबह की लालिमा से युक्त कोमल, मन को लुभावन धूप हो जिस पर चलना संसार के सभी सुखों से इतर है

या शाम की विदाई बेला का शांत बिल्कुल शांत, सुगंधित, तुलसी, नीम के पौधों की खुशबुओं से सनी झूमती, इठलाती, मटक कर चलती हवा हो, मिट्टी जो जीवन भर के तमाम झँझावातों से लड़ खड़े होने के बाद भी मनुष्यों में जिजीविषा को बरकरार रखती है, खुद में समेटे रहती है पीढ़ियों-पीढ़ियों पूर्व की गंध, जिसमें पुराने गीत, संस्कृति, संस्कार का पुट हमेशा जिंदा रहता है ऐसे ही वातावरण में एक नन्हा सा बालक जिसके मन में शुरू से ही कला के प्रति दीवानगी थी जो सपने में भी कोयले से आभासीय पटल पर अपने मनमुताबिक कृतियों का सृजन करने लगा था, अनगिनत कृतियों का संसार जिसके भीतर समाया हुआ था और जो आगे चलकर बिल्कुल शांत, धीर-गंभीर कला साधक के रूप में पहचाना गया। भारतीय कला में नंदलाल बोस की भूमिका अपने गुरु अवनीन्द्रनाथ जैसी ही रही बल्कि कई-कई जगह तो उनसे आगे भी बढ़ गए हैं। बिल्कुल साधारण से परिवार में जन्मे कलाकार नंदलाल आर्थिक संपन्नता से भले ही दूर रहे हों पर सच्चाई तो ये है कि संस्कारों से भरा-पूरा माहौल था। माँ हमेशा पूजा-अर्चना में लगी रहती थीं, घर के सभी अच्छी-बुरी चीजों पर बारीकियों से नजर रखती थीं और मौका मिलते ही जीवन के कई-कई अध्यायों को पलक झपकते ही समझा भी देती थीं। सोते जागते या जब भी लगता तो नंदलाल को लोककथाएं, किस्से भी सुनाती रहती थीं। गुड्डे-गुड़ियों, खेल-खिलौनों, छोटे-मोटे हस्तशिल्पों तथा अल्पना वगैरह भी बनाते रहा करती थीं। बालक जिसका जन्म बिहार के मुंगेर जिले के खड़कपुर क़स्बे में हुआ था, खड़कपुर जो अपने झील और हरियाली वातावरण हेतु प्रसिद्ध था, जहाँ आम, नीम महुआ, छोटी नदियाँ, तालाब, हरे-भरे खेत-खलिहान तो खेतों को जोड़ती अलग करती पतली-पतली पगडंडियाँ और मिट्टी के कच्चे खपरैलों वाले घर थे, जो आगे चलकर बालक के कृतियों को गहरे तक प्रभावित किए थे।

नंदलाल बचपन से ही माँ द्वारा बनाए जा रहे कृतियों को देखकर मंत्रमुग्ध थे, को बचपन में कला अपने माँ से ही सीखने को मिली। हालांकि यह समय बहुत दिनों तक नहीं चल सका और जल्दी ही इनके माता का देहान्त हो गया। दुख की घड़ी के बाद से ही बालक नंदलाल के परवरिश का जिम्मा पिता जी पर आ गया, जो उन्होंने बखूबी निभाया। कस्बे में स्थानीय कुम्हार अधिक मात्रा में थे फलतः अधिकतर घरों में मिट्टी के बर्तन, खिलौने हमेशा कुछ न कुछ बन ही रहा होता था जिसे बालक घंटों खड़े होकर निहारता रहता था और धीरे-धीरे खुद भी बनाने का प्रयास करने लगा और इसी बहाने नंदलाल बहुत कुछ सीख लिए।

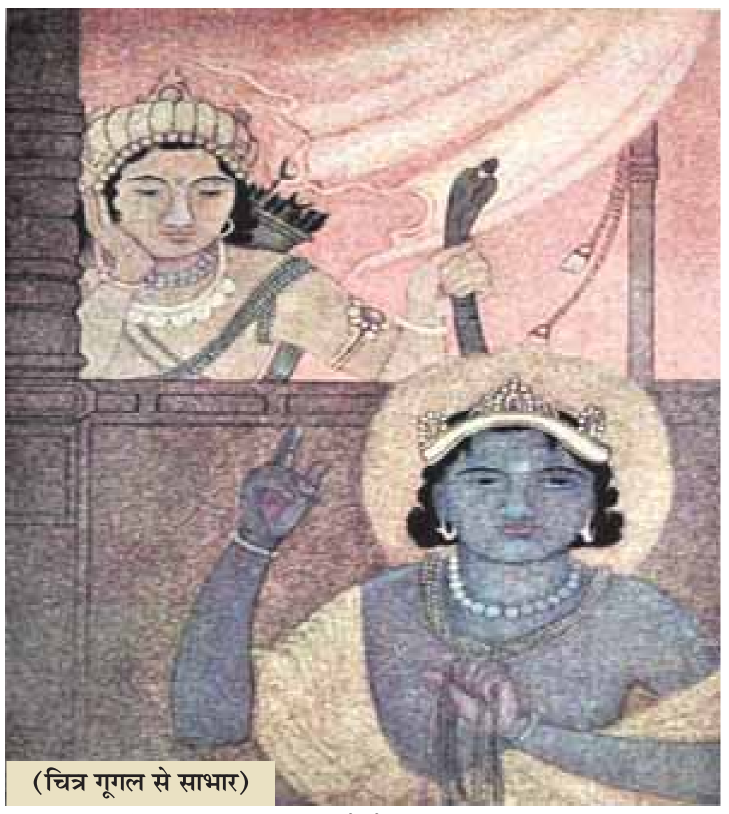
(चित्र गूगल से साभार)

समय-समय पर दुर्गा पूजा जैसे और भी उत्सवों की तैयारी में पूरे मन से लगे रहते थे नंदलाल बोस।

बालक का मन पढ़ने में कभी नहीं लगा फिर भी पिता के इच्छानुसार की मेरा बच्चा पढ़-लिखकर कर स्थायित्व को प्राप्त कर लेगा फलतः पंद्रह वर्ष की अवस्था में नंदलाल अध्ययन हेतु कलकत्ता चले गए, अध्ययन करते रहे पर मन था कि यहाँ रमता नहीं था। बाँधे-बाँधे बियाह कैसे संभव होता, बोस का भी मोहभंग हो गया था पढ़ाई से, पढ़ते तो थे पर बढ़ नहीं पाते थे, स्कूल बदलते रहे कि कहीं से तो आगे बढ़ सके पर रंगों से खेलने को आतुर कलाकार को रटंत शिक्षा कहाँ तक बाँध पाती, नहीं बंधे बोस। कला हेतु परिवार राजी नहीं था तो शिक्षा हेतु नंदलाल। इन्हीं द्वंद्वात्मक परिस्थितियों से लगातार जूझते हुए इक्कीस वर्षीय नंदलाल का विवाह एक दिन सुधीरा देवी जी से हो गया। नंदलाल के कला सफर में भी

सुधीरा देवी ने भरपूर सहयोग किया। नन्दलाल बोस को बनना तो कलाकार था आखिर कब तक कोई रोक पाता, नहीं रोक सका और अंत में 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' वाली बात चरितार्थ हुई। धीरे-धीरे परिवार को मना लेने में सफलता हासिल हुई पर मुश्किलें यहीं नहीं रुकीं बल्कि साथ चलती रहीं और जैसे कहा जाता है कि हर सुबह के पूर्व गहन अंधेरे से सामना होता है कुछ ऐसी ही परिस्थिति यहाँ भी बनी कलकत्ता कला विद्यालय में दाखिला भी बड़े मशक्कत के बाद ही मिल सका। नंदलाल को सानिध्य मिला अवनींद्रनाथ टैगोर जी का जो उस समय कला में नई क्रांति हेतु काम कर रहे थे जिनके काम से नंदलाल बहुत प्रभावित थे।

कला विद्यालय में दाखिले के बाद से आप तो जैसे उसी दुनिया में रम से गये और नित नये कारनामों से लोगों को आश्चर्य चकित करते रहे सीखने के साथ ही अपने अलग शैली पर भी आप लगातार काम करते रहे थे। ग्रामीण परिवेश जो आपके मन में बसा हुआ था आपके कृतियों में उतरने लगा। आकृतियाँ स्वतंत्र थीं पर मिट्टी की महक बरकरार थी, मटमैला पृष्ठभूमि, लचकदार कद-काठी आपके कृतियों की पहचान बनी। नंदलाल के कृतियों में संश्लेषणात्मकता की छाप साफ नजर आती है।

आधुनिक भारतीय कला के इतिहास में महान भूमिका वाले कलाकार नंदलाल अवनीन्द्रनाथ, रवीन्द्रनाथ, आनंद कुमार स्वामी, हैवेल, महात्मां गांधी जैसे प्रमुख विचारकों के विचारों को एक साथ समन्वित करते हुए, अपने कृतियों में मौलिकता को बचाते हुए, जन आंदोलन के साथ भी जुड़ सके। देश के परिस्थितियों और उस दौर के कला के परिस्थितियों दोनों को एक दिशा देने में इनके भूमिका को भी भुलाया नहीं जा सकता। बोस के कृतियों में शालीनता है, वर्णनात्मक पद्धति पर सृजित कृतियाँ लोगों के जेहन तक अपनी पहुँच आसानी से बना लेती हैं। सुलभ तरीके से भावों को पटल पर प्रवाहित करने का उनका अपना अंदाज था। वो तमाम आडंबरों से दूर ही रहा करते थे।

चित्रकार रजा की यादों के आसपास

स्मरण
ध्रुव शुक्ल
लेखक साहित्यकार हैं।

सतपुड़ा के जंगलों के बीच बसे मण्डला शहर में चार दिन बिताकर लौट रहा हूँ और मन में छत्तीसगढ़ की अप्रतिम लोकगायिका और हबीब तनवीर के नया थियेटर से आजीवन जुड़ी रहीं पूनम तिवारी का गायन गूँज रहा है। यह गीत मेरा पीछा ही नहीं छोड़ रहा ---

चोला माटी के राम
एकहि का भरोसा, चोला माटी के रे....

द्रोना जैसे गुरू चले गये, करन जैसे दानी बाली जैसे बीर चले गए रावन से अभिमानी हाय चोला माटी के रे....

जब देश में हो रहे कई तरह के अन्याय के विरुद्ध हमारे बच्चे दिल्ली के जंतर-मंतर पर आंदोलित हो रहे हैं, संयोगवश हम कुछ लेखक-कलाकार मण्डला में चित्रकार सैयद हैदर रज़ा की समाधि पर फूल चढ़ाने गये थे। हम रज़ा के रचे चित्रों में बसे प्रकृति और संसार के बीच उदारचरित राम, सत्याग्रही गांधी और राम- रहीम के एकत्व की अंतरंग उपस्थिति को महसूस करते रहे हैं।

हम सबने मिलकर संसार, प्रकृति और साहित्य के अंतर्संबन्ध पर तीन दिनों तक बातचीत की और उसका सार यह निकला कि कुटिल राजनीतिक और बाजारू शक्तियाँ साधन रूप और मानव स्वभाव रूप जिस प्रकृति का विनाश करके धरती पर बसे समूचे जीवन को साधनहीन और संवेदनहीन बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं तब अस्तित्व पर मॅंडराते ख़तरों की आहटों के बीच साहित्यकार इससे अछूते नहीं रह सकते।

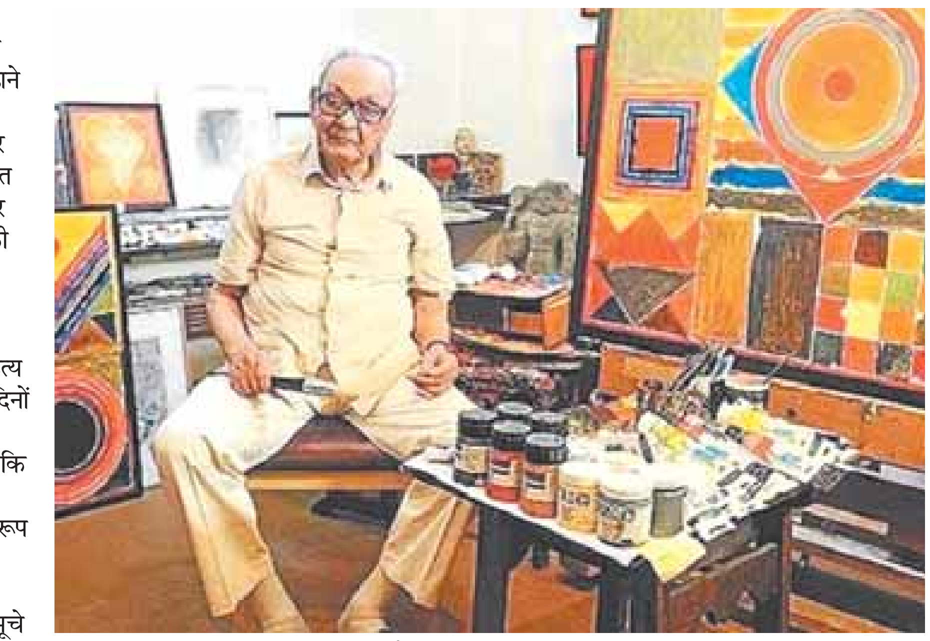

सभी लेखक इस मण्डला- साहित्य-कला विमर्श में इस विषय पर एकाग्र बने रहे कि जिस तरह विश्व का जीवन परस्पर अंतर्निभर है उसी तरह इस बहुरंगी जीवन का आख्यान करने वाला साहित्य और कलाएं भी अंतर्निभर हैं। वे परस्पर एक-दूसरे पर आश्रित हैं। सब राग, मूर्तियाॅ, रंगाकार, मुद्राएं और कविताएं मिलकर सबके जीवन में वह संभावना भरा पड़ौस सदियों से रचती चली आ रही हैं जिसमें मनुष्य समूचे अस्तित्व और अपनी मानवीयता का प्रामाणिक अर्थ पा सकते हैं। यह दुखद है कि शब्द-विद्या और कला के अंतरंग संबन्ध को समझने में हमारे समय की राजनीति अकुशल और भारी लापरवाह है।

मण्डला में हर वर्ष दो बार फरवरी और जुलाई में (रज़ा के जन्म दिवस और पुण्य तिथि पर) चित्रकार रज़ा की स्मृति में अनेक लेखक, चित्रकार, संगीतकार और कला पारखी पर्यवेक्षक आते हैं। दस वर्षों से रज़ा फाउण्डेशन अत्यंत सुरुचिपूर्वक यह आयोजन कर रहा है। इस साल भी लेखकों के विचार-

विमर्श के अलावा संध्याकाल में नर्मदा जी के तट पर पण्डवानी गायन, मोहिनी अट्टम की प्रस्तुति, शानदार मुशायरा और छत्तीसगढ़ी लोक गायन हुआ।पाॅच दिनों तक लोक कलाकारों की कार्यशाला में काष्ठ शिल्प बनते रहे, चित्र रचे गये। एक कला प्रदर्शनी भी सबके लिए खुली रही। हर वर्ष इस आयोजन में मण्डला के नागरिक भी शामिल होते हैं।

रज़ा फाउण्डेशन के निदेशक और कवि अशोक वाजपेयी ने निराशा से भरते जा रहे इस समय में निराशा के सृजनात्मक कर्तव्यों की याद दिलाते हुए सचेत किया कि हम चुप नहीं रह सकते। उन्होंनें अन्याय के शिकार बेटे- बेटियों के प्रति समुचित न्याय की माॅग भी की। इस अवसर पर अशोक वाजपेयी ने च्हम भारत के लोग नाम से होने वाले एक बड़े देश व्यापी वैचारिक अभियान की घोषणा की है जो नौ अगस्त 2026 से प्रारम्भ होगा। देश के लगभग पचास शहरों में विभिन्न वैचारिक अनुशासनों से संबद्ध विद्वान भारत के संविधान की उद्देशिका में स्थापित--- स्वतंत्रता, समता, न्याय और बंधुता के मूल्यों पर जनसंबोधी विमर्श करेंगे।

फिल्म समीक्षा
आदित्य दुबे
लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

ओह माय डॉगः साफ सुथरी और प्रेरणादायक फिल्म

बाबूलाल बायोस्कोप और थिंकिंग हैट्स एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी,अमित राय, राजेश भारद्वाज और सना वारसी द्वारा निर्मित इस फिल्म में माही राय, पंकज त्रिपाठी, गीता अग्रवाल शर्मा, राजेश कुमार, पवन मल्होत्रा, सुलाख्याना बरुआ, विजय मिश्रा के साथ-साथ कैनाइन स्टार्स ऑस्कर और ब्रूनो प्रमुख भूमिकाओं में नज़र आएंगे। फिल्म में 250 से अधिक कुत्ते शामिल हैं। यह एक छोटे बच्चे और उसके प्यारे साथी डॉग के बीच के खूबसूरत और भावनात्मक रिश्ते की कहानी है।यह फिल्म बच्चों के लिए एक बेहतरीन पारिवारिक मनोरंजन है। इसमें जानवरों के प्रति दया, सहानुभूति और विकलांगता को कमजोरी न मानने का एक मजबूत संदेश दिया गया है।फिल्म दर्शकों को डर और पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर जानवरों के प्रति संवेदनशील बनने और उनके साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। फिल्म में वास्तविक जीवन के तीन पीढ़ी के कलाकारों—विजयकुमार, अरुण विजय और उनके बेटे अर्नव विजय ,जो इस फिल्म से डेब्यू कर रहे हैं , को एक साथ देखना दिलचस्प है।

दक्षिण भारत के जाने-माने निर्देशक सरोव शनमुगम की तमिल फिल्म- ' ओह माय डॉग ' वर्ष 2022 में प्रदर्शित हुई थी । एक बच्चे और अंधे साइबेरियन हस्की पिल्ले के बीच के खूबसूरत भावनात्मक रिश्ते पर आधारित थी वह फिल्म । जहाँ इसका नेक इरादा बच्चों को बहुत पसन्द आया था । अब चर्चित फिल्म - 'ओह माय गॉड 2 ' के सफल निर्देशक अमित राय उसी फिल्म का हिन्दी संस्करण - ' ओह माय डॉग ' लेकर दर्शकों के बीच आये हैं। यह फिल्म आगामी 31 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी। निर्माताओं ने फिल्म का टीज़र जारी किया है जो इंसानों और कुत्तों के बीच मौजूद प्यार, भरोसे और अटूट रिश्ते की एक भावनात्मक कहानी की झलक पेश करते है।

बाबूलाल बायोस्कोप और थिंकिंग हैट्स एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी,अमित राय, राजेश भारद्वाज और सना वारसी द्वारा निर्मित इस फिल्म में माही राय, पंकज त्रिपाठी, गीता अग्रवाल शर्मा, राजेश कुमार, पवन मल्होत्रा, सुलाख्याना बरुआ, विजय मिश्रा के साथ-साथ कैनाइन स्टार्स ऑस्कर और ब्रूनो प्रमुख भूमिकाओं में नज़र आएंगे। फिल्म में 250 से अधिक कुत्ते शामिल हैं। यह एक छोटे बच्चे और उसके प्यारे साथी डॉग के बीच के खूबसूरत और भावनात्मक रिश्ते की कहानी है।यह फिल्म बच्चों के लिए एक बेहतरीन पारिवारिक मनोरंजन है।इसमें जानवरों के प्रति दया, सहानुभूति और विकलांगता को कमजोरी न मानने का एक मजबूत संदेश दिया गया है।फिल्म दर्शकों को डर और पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर जानवरों के प्रति संवेदनशील बनने और उनके साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। फिल्म में वास्तविक जीवन के तीन पीढ़ी के कलाकारों—विजयकुमार, अरुण विजय और उनके बेटे अर्नव विजय ,जो इस फिल्म से डेब्यू कर रहे हैं , को एक साथ देखना दिलचस्प है।

फिल्म की कहानी अर्जुन (अर्नव विजय) और सिम्बा (हस्की पिल्ले) के इर्द-गिर्द घूमती है। सिम्बा जन्म से ही दृष्टिबाधित है, जिसके कारण एक क्रूर ब्रीडर उसे छोड़ देता है। अर्जुन उसे बचाता है और दोनों के बीच एक गहरा बंधन बन जाता है। इसके बाद की कहानी सिम्बा के इलाज, एक डॉग शो प्रतियोगिता और एक भ्रष्ट विलेन के खिलाफ उनकी लड़ाई को दर्शाती है ।समैक्षकों का मानना है कि फिल्म की कहानी काफी अनुमान लगाने योग्य और पुरानी है। फिल्म की पटकथा में कुछ तार्किक कमियां हैं और कई जगहों पर भावनाओं को जबरदस्ती थोपा गया सा भी लगता है । चूँकि फिल्म की पटकथा काफी हद तक बच्चों को ध्यान में रखकर लिखी गई है, जिसके कारण वयस्क दर्शकों को यह थोड़ी नीरस लग सकती है। अगर आप डॉग प्रेमी हैं या बच्चों के साथ देखने के लिए एक साफ-सुथरी, प्रेरणादायक फिल्म तलाश रहे हैं, तो यह एक अच्छा विकल्प है। लेकिन अगर आप एक मजबूत और लीक से हटकर पटकथा वाली फिल्म की उम्मीद कर रहे हैं, तो आप थोड़े निराश हो सकते हैं ।इस फिल्म की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह एक पारिवारिक मनोरंजक फिल्म होने के साथ-साथ इंसानों और जानवरों, विशेष रूप से कुत्तों, के बीच प्रेम, दोस्ती, दया और करुणा का संदेश देती है। फिल्म दर्शकों को डर और पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर जानवरों के प्रति संवेदनशील बनने और उनके साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

फिल्म के टीज़र की शुरुआत अमिताभ बच्चन के सदाबहार गीत 'मेरे पास आओ मेरे दोस्तों, एक किस्सा सुनो' से होती है, जो दर्शकों में पुरानी यादों को ताज़ा करते हुए कहानी की मासूमियत, अपनापन और भावनात्मक गहराई को खूबसूरती से सामने लाता है।निर्देशक अमित राय के अनुसार कुत्ते हमें निस्वार्थ प्रेम और वफादारी का सबसे शुद्ध रूप सिखाते हैं इन्हीं के माध्यम से मैं ऐसी कहानी कहना चाहता था जो भावनात्मक होने के साथ-साथ मनोरंजक भी हो और हर परिवार के दिल को छू सके। यह सिर्फ एक बच्चे और उसके डॉग की कहानी नहीं है, बल्कि सभी जीवों के साथ करुणा और प्रेम के साथ सह-अस्तित्व में जीने का संदेश है। अगर इस फिल्म को देखने के बाद लोगों के मन में जानवरों के प्रति थोड़ी भी संवेदनशीलता और दया बढ़ती है, तो मुझे लगेगा कि हमारी फिल्म अपने उद्देश्य में सफल रही ।

पहली बार निकली जगन्नाथ रथ यात्रा से पावन हुई बैतूल नगरी

जय जगन्नाथ- हरि बोल के जय घोष से गूंजा आसमान

बैतूल। बैतूल के लिए आज का दिन इतिहास के पन्नों में हमेशा याद रहेगा। अवसर था, जगन्नाथ जी की रथ यात्रा का। वैसे तो अमूमन धार्मिक माहौल में वर्षों से रचा बसा एवं साम्प्रदायिक सद्भाव की मिशाल बना बैतूल शहर में समय-समय पर अनेक आयोजन होते है लेकिन देवशयनी एकादशी के शुभ अवसर पर 25 जुलाई शनिवार को पूरे भक्ति-भाव के साथ पहली बार निकली भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा में हजारों श्रद्धालुओं की मौजूदगी ने इतिहास रच दिया। इस्कॉन इंदौर के मार्गदशर्न में श्री जगन्नाथ रथ यात्रा समिति ने माता मंदिर गंज से रथ यात्रा प्रारंभ की। फूलों से सजे धजे रथ में सवार भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलभद्र एंव बहन सुभद्रा दर्शन देने निकले तो श्रद्धालु उनकी एक झलक पाकर धन्य हो गए थे। यात्रा के दौरान जय जगन्नाथ- हरि बोल के जय घोष से आसमान गूंज उठा था। रथ यात्रा के समापन पर इस्कॉन इंदौर के महा मनदास आदि संतों ने प्रवचन दिए।

झूमते-नाचते चल रहे थे श्रद्धालु

श्री जगन्नाथ रथ यात्रा समिति के अरूण सिंह किलेदार एवं राजेश आहूजा ने बताया कि माता मंदिर गंज से शाम चार बजे भगवान जगन्नाथ की पवित्र रथ यात्रा प्रारंभ हुई, तो पूरा क्षेत्र भक्ति के माहौल में डूब गया था। इसके पूर्व यहां पहुंचे इस्कॉन इंदौर के महा मनदास ने फूलों से सजे-धजे रथ में विराजमान भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलबद्र एंव बहन सुभद्रा की पूजा-अर्चना के साथ आरती संपन्न कराई बाजे-गाजे के साथ प्रारंभ हुई रथ यात्रा में इस्कॉन इंदौर की दस सदस्यीय टीम मृदंग एवं मजीरे बजाकर भगवान कृष्ण के भजन गाते चल रहे थे वहीं श्रद्धालु अपने को भी भक्ति भाव में लीन कर डीजे पर बज रहे भजन जगन्नाथ जगन्नाथ चक्का नैन, नीलाचल वाले, तू ना संभाले तो हमें कौन संभाले पर नाचते-गाते चल रहे थे। श्रद्धालु यात्रा के दौरान जय जगन्नाथ हरि बोल के जय घोष लगा रहे थे। उन्होंने बताया कि रथ को खींचने के लिए महिला, पुरुषों के अलावा बच्चे भी काफी उत्सुक थे।

रथ का जगह-जगह हुआ भव्य स्वागत

आयोजन समिति से जुड़े योगी खंडेलवाल एवं जैमिन पटेल ने बताया कि रथ यात्रा कांतिशिवा चौक, दिल बहार चौक, मस्जिद चौक, एचडीएफसी बैंक से तांगा स्टैंड चौक से होते हुए आदित्य होंडा शोरूम के सामने से निकलकर शाम करीब पांच बजे रामकृष्ण बगिया पहुंची। इन मार्गों में श्रद्धालुओं ने रथ यात्रा का जगह-जगह फूल मालाओं से स्वागत किया. रथ यात्रा में शामिल श्रद्धालु रथ खींचकर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा के दर्शन पाकर अभिभूत हो गए थे. उन्होंने बताया कि विभिन्न सामाजिक संगठनों, जनप्रतिनिधियों, व्यापारियों एवं गणमान्य नागरिकों ने रथयात्रा का आत्मीयता के साथ जोरदार स्वागत किया।

बनी परंपरा आगे भी जारी रहेगी

आयोजन से जुड़े हेमंत पगारिया, अतुल पगारिया एवं रामानुज माहेश्वरी ने बताया कि रथ यात्रा के आयोजन पर इस्कॉन इंदौर से मार्गदर्शन लेकर करीब एक माह से तैयारी चल रही थी। जन सहयोग से सफल हुई रथ यात्रा की परंपरा को आगे भी बनाए रखने का समिति ने निर्णय लिया है। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं खासकर महिलाओं, बच्चों एवं बुर्जुगों को असुविधा नहीं हो इसको लेकर गंभीरता के साथ पूरी सावधानी बरतने से यात्रा में किसी को भी दर्शन करने एवं रथ खींचने में असुविधा नही हुई, उन्होंने जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन एवं यातायात पुलिस के प्रति व्यवस्था बनाने में मिले सहयोग एवं धर्मप्रेमी नागरिकों के प्रति अपार स्नेह के प्रति आभार माना। भगवान जगन्नाथ की यात्रा के दौरान सेवाभावी लोगों ने श्रद्धालुओं के लिए जगह जगह फलों,स्वल्पाहार एवं चाय के स्टाल लगाए थे। यहां रथ के पहुंचने पर भगवानों का फूलों से स्वागत भी किया गया।

आंगन में घूम रहे तेंदुआ को कुत्ता समझ बुजुर्ग महिला ने बाहर से लगाई कुंडी

वन विभाग ने सुरक्षित रेस्क्यू ऑपरेशन किया

मंडला (नप्र)। मध्य प्रदेश के मंडला जिले में कान्हा टाइगर रिजर्व के बफर जोन से लगे एक गांव में शुक्रवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया जब एक तेंदुआ सीधा एक ग्रामीण के घर के अंदर जा घुसा। लेकिन मौके पर मौजूद 65 साल की बुजुर्ग महिला गीडिया बाई अहिरवार ने गजब की हिम्मत और सूझबूझ का परिचय दिया, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। महिला ने खतरे को भांपते हुए बिना घबराए तेंदुए को कमरे के अंदर ही बंद कर दिया और तुरंत पड़ोसियों व वन विभाग को सूचना दी, जिसके बाद सुरक्षित रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया गया।

यह घटना शुक्रवार सुबह करीब 7:30 बजे कान्हा टाइगर रिजर्व के सिझोरा बफर जोन के पास स्थित खटोला गांव की है। गीडिया बाई अपने घर के आंगन में काम कर रही थीं, तभी उन्हें अंदर किसी जानवर के घुसने की आहट सुनाई दी। उन्होंने अधिकारियों को बताया कि शुरुआत में उन्हें लगा कि कोई कुत्ता अंदर आया होगा, लेकिन जब उन्होंने अंदर जाकर देखा तो उनके होश उड़ गए क्योंकि सामने एक तेंदुआ खड़ा था।

बिना घबराए बाहर से लगाई कुंडी

तेंदुए को सामने देखने के बावजूद गीडिया बाई ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने बेहद शांति से काम लिया और चुपचाप बाहर निकलकर मुख्य दरवाजे की कुंडी बाहर से लगा दी। इसके बाद उन्होंने तुरंत आसपास के लोगों और ग्रामीणों को इस बात की जानकारी दी।

आसपास के लोगों को सुरक्षित जगह पर हटाया

घर के अंदर तेंदुए की मौजूदगी पुख्ता होने के बाद अधिकारियों ने विशेषज्ञों की मदद से उसे ट्रेंकुलाइज किया। कड़ी मशक्कत के बाद वन विभाग की टीम ने तेंदुए को सुरक्षित रेस्क्यू कर लिया, जिससे ग्रामीणों ने राहत की सांस ली।

बुजुर्ग महिला की तारीफ कर रहे ग्रामीण

सुबह-सुबह हुई इस घटना के बाद से पूरे इलाके में बुजुर्ग महिला गीडिया बाई की बहादुरी की चर्चा हो रही है। अगर महिला थोड़ी भी घबरा जाती या शोर मचाती, तो तेंदुआ हमला कर सकता था। लेकिन उनकी तत्परता के कारण न सिर्फ उनकी जान बची, बल्कि वन्यजीव का भी सुरक्षित रेस्क्यू संभव हो सका।

एक बार फिर धीमी पड़ी मानसून की रफ्तार

बैतूल। जिले में मानसून की रफ्तार एक बार फिर धीमी पड़ गई है। पिछले सोमवार 20 जुलाई से शनिवार 25 जुलाई तक पांच दिनों में जिले में औसतन केवल 20.5 मिमी वर्षा दर्ज हुई है। इस दौरान 20 जुलाई को 15.8 मिमी, 21 जुलाई को 3.1 मिमी, 23 जुलाई को 12.5 मिमी, 24 जुलाई को 0.5 मिमी और 25 जुलाई को केवल 1.1 मिमी बारिश हुई। पिछले चार दिनों से अधिकांश क्षेत्रों में बारिश लगभग थमी हुई है। इससे दिनभर उमस बढ़ गई है और लोग गर्मी से परेशान हैं। 25 जुलाई तक जिले में कुल औसत वर्षा 338.7 मिमी दर्ज की गई है। जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि तक 398.7 मिमी वर्षा हो चुकी थी। यानी इस वर्ष अब तक 60 मिमी कम बारिश हुई है। वहीं जिले की औसत सामान्य वार्षिक वर्षा 1083.9 मिमी है। इसके मुकाबले अब तक केवल 338.7 मिमी बारिश हुई है, यानी अभी भी 745.2 मिमी वर्षा की कमी बनी हुई है। हालांकि मानसून का बड़ा हिस्सा अभी बाकी है। बारिश रुकने से हवा में नमी बढ़ गई है। सुबह और शाम के समय उमस अधिक महसूस की जा रही है, जबकि दिन में बादल छाने के बावजूद तेज धूप निकलने से चिपचिपी गर्मी लोगों को परेशान कर रही है। मौसम विभाग के अनुसार बैतूल में अगले सात दिनों तक आसमान में बादल छाए रहने, गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश की संभावना बनी हुई है। 28 से 30 जुलाई के बीच वर्षा की गतिविधियों में बढ़ोतरी हो सकती है। फिलहाल अधिकतम तापमान 27 से 30 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है। मध्य प्रदेश में सक्रिय मानसून तंत्र के कारण कई जिलों में बारिश की संभावना जताई गई है, जिससे बैतूल में भी सप्ताह के दूसरे हिस्से में अच्छी वर्षा की उम्मीद है।

रीवा में मूसलाधार बारिश के बाद ढहा आशियाना, घर का सारा सामान मलबे में दबा; मुआवजे की गुहार

रीवा (नप्र)। मध्य प्रदेश के रीवा जिले में पिछले दो दिनों से जारी मूसलाधार बारिश अब लोगों के लिए आफत बनती जा रही है। बारिश के इस कहर ने त्यौंथर तहसील के अमाव गांव में एक परिवार का आशियाना उजाड़ दिया। लगातार हो रही भारी बारिश के चलते राजभान तिवारी का कच्चा-पक्का मकान अचानक भरभराकर ढह गया। गनीमत यह रही कि हादसे से ठीक पहले परिवार के सदस्य सूझबूझ दिखाते हुए घर से बाहर निकल आए, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया और किसी की जान नहीं गई।

हालांकि, इस दर्दनाक हादसे में मकान पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है और घर के अंदर रखा सारा घरेलू सामान, राशन और जरूरत की चीजें मलबे के नीचे दब गई हैं। मकान गिरने के बाद अब इस परिवार के सामने सबसे बड़ा संकट सिर छिपाने की जगह का बन गया है। लगातार हो रही बारिश के बीच बेघर हुए इस परिवार के पास अब रहने के लिए कोई सुरक्षित ठिकाना नहीं बचा है, जिससे उन्हें खुले आसमान के नीचे या रिश्तेदारों के यहां शरण लेने को मजबूर होना पड़ रहा है।

प्रशासन से मुआवजे और तत्काल मदद की गुहार- घटना के बाद पीड़ित राजभान तिवारी और स्थानीय ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से तत्काल नुकसान का सर्वे कराने की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र में हो रही लगातार बारिश के कारण कई अन्य कच्चे मकानों को भी आंशिक नुकसान

पहुंचा है, जिससे लोगों में दहशत का माहौल है। पीड़ित परिवार ने शासन-प्रशासन से नियमानुसार आर्थिक सहायता और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत त्वरित मकान दिलाने की मांग की है। स्थानीय लोगों ने अपील की है कि बारिश के इस मौसम में प्रशासन सर्वे टीम भेजकर सभी प्रभावित परिवारों को तुरंत राहत और तिरपाल आदि की व्यवस्था उपलब्ध कराए।

बारिश के मौसम में बढ़ाई चिंताएं- रीवा अंचल में लगातार हो रही बारिश ने एक बार फिर कमजोर मकानों की सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। फिलहाल, पीड़ित परिवार टकटकी लगाए प्रशासन की ओर देख रहा है कि उन्हें कब तक उचित मुआवजा और राहत राशि मिल पाती है ताकि वे इस मुसीबत के दौर से उबर सकें।

नगरपालिका ने कारगिल चौक से हटाया अतिक्रमण

हाईमास्ट लाइट, नए सेंटर प्वाइंट और यात्री सुविधाओं के साथ संवरेगा चौराहा

बैतूल। शहर के प्रमुख कारगिल चौक का स्वरूप जल्द ही पूरी तरह बदल जाएगा। नगर पालिका ने चौक के सौंदर्यीकरण की योजना पर काम शुरू कर दिया है। इसी क्रम में शुक्रवार को नगर पालिका के अमले ने मौके पर पहुंचकर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की। चौक के आसपास से लगभग आठ से दस गुमटियां हटाई गई, जबकि फल विक्रेताओं को व्यवस्थित स्थान पर स्थानांतरित किया गया। नगर पालिका के अनुसार, कारगिल चौक का मौजूदा सेंटर प्वाइंट भी बदला जाएगा। नया सेंटर गंज रोड की ओर स्थानांतरित किया जाएगा। अधिकारियों ने इसके लिए मौके पर माप-जोख भी किया है। चौक का विकास नए लेआउट के अनुसार किया जाएगा। सौंदर्यीकरण योजना के तहत चौक पर हाईमास्ट लाइट लगाई जाएगी, जिससे पूरे क्षेत्र में बेहतर रोशनी सुनिश्चित होगी। यात्रियों के बैठने के लिए दस बेंच स्थापित की जाएंगी। चौक की सुरक्षा और सुंदरता बढ़ाने के लिए बोलार्ड लाइटें लगाई जाएंगी और लगभग दो फुट आठ इंच आकार के बड़े सजावटी गमले भी रखे जाएंगे। कारगिल स्मारक (मिसाइल) को भी आकर्षक रूप देने की तैयारी है। स्मारक पर फोकस लाइटें लगाई जाएंगी, जिससे रात के समय इसकी भव्यता बढ़ेगी। साथ ही पूरे स्मारक का रंग-रोगन भी कराया जाएगा। नगर पालिका अधिकारियों के अनुसार, इस कार्य का वर्क ऑर्डर जारी हो चुका है। कारगिल चौक के सौंदर्यीकरण का काम एक निजी कंपनी को सौंपा गया है, जो शहर के अन्य सौंदर्यीकरण कार्यों को भी अंजाम दे रही है। नगर पालिका का कहना है कि अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई सौंदर्यीकरण परियोजना का पहला चरण है। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद कारगिल चौक अधिक व्यवस्थित, आकर्षक और यात्री सुविधाओं से युक्त दिखाई देगा। बदले हुए सेंटर प्वाइंट और आधुनिक प्रकाश व्यवस्था से चौक की पहचान भी नए स्वरूप में सामने आएगी।

भोपाल में हर 15 मिनट में मिलेगी मेट्रो

सुभाषनगर से एम्स के बीच 50 ट्रिप लगाएगी; दोनों ट्रैक पर दौड़ेगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल मेट्रो हर 15 मिनट में मिलेगी। सुभाषनगर से एम्स के बीच दोनों ट्रैक पर दौड़ेगी और कुल 50 ट्रिप लगाएगी। मेट्रो कॉरपोरेशन के मुताबिक, 7 महीने बाद सिंग्नलिंग सिस्टम की शुरुआत होगी।

बता दें कि भोपाल में मेट्रो की शुरुआत 20 दिसंबर 2025 को हुई थी। केंद्रीय मंत्री मनोहरलाल खट्टर, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मेट्रो की शुरुआत की थी। वहीं, अगले दिन से आम लोगों के लिए मेट्रो ट्रैक पर दौड़ने लगी थी। अब तक सिंगल ट्रैक पर ही मेट्रो चल रही थी, जबकि शनिवार से मेट्रो दोनों ट्रैक पर चलने लगेगी।

पीक ऑवर्स में 15 मिनट में दूसरी मेट्रो- सुभाषनगर मेट्रो स्टेशन से एम्स के लिए पहली ट्रेन सुबह 9 बजे से चलेगी। पीक ऑवर्स में हर 15 मिनट में मेट्रो में सफर हो सकेगा, जबकि दिन में 30 मिनट का फांसला रहेगा। अभी ये अंतर 75 मिनट है।

जून में सीएमआरएस ने किया था निरीक्षण- मेट्रो के सिंग्नलिंग सिस्टम के लिए कमिश्नर ऑफ मेट्रो रेल सेफ्टी जून में भोपाल आई थी। दो दिन तक टीम भोपाल रुकी थी। इसके बाद गुरुवार को हरी झंडी मिलने की खबर आ गई। इसके बाद 25 जुलाई से नए सिस्टम के हिसाब से ही मेट्रो का संचालन करने का प्लान बनाया गया।

आयुष विभाग ने 455 गर्भवतियों का कराया गर्भ संस्कार

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत जिले के 14 केंद्रों पर हुआ आयोजन

बैतूल। गर्भवती महिलाओं और गर्भस्थ शिशु के समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के उद्देश्य से आयुष विभाग द्वारा जिले में गर्भ संस्कार कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। शनिवार को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत जिले के सभी 10 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों सहित कुल 14 केंद्रों पर आयोजित कार्यक्रम में 455 गर्भवती महिलाओं को गर्भ संस्कार कराया गया। कार्यक्रम कलेक्टर के नेतृत्व और जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर के मार्गदर्शन में गठित आयुष चिकित्सकों की टीम द्वारा आयोजित किया जा रहा है। प्रत्येक माह की 9 और 25 तारीख को होने वाले इस कार्यक्रम में गर्भवती महिलाओं को गर्भ संस्कार के महत्व, मातृ स्वास्थ्य तथा गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर इसके सकारात्मक प्रभावों की जानकारी दी जाती है। आयुर्वेद के अनुसार गर्भावस्था के दौरान मां के विचार, भावनाएं, आहार और दिनचर्या का सीधा असर गर्भस्थ शिशु के विकास पर पड़ता है। विभाग के अनुसार गर्भ संस्कार तनाव और चिंता कम करने, सकारात्मक मानसिक स्थिति बनाए रखने तथा प्रसव को सहज बनाने में भी सहायक है।

राम-जानकी मंदिर से बहुधा जगन्नाथ रथयात्रा में जगन्नाथ, बलभद्र, बहिन सुभद्रा अपने घर मिश्र जी मंदिर लौटे

सोहागपुर। विगत दिनों मिश्र जी मंदिर निकली जगन्नाथ रथयात्रा में भगवान् जगन्नाथ, बलभद्र बहिन सुभद्रा ने कुछ दिन रामगंज के राम-जानकी मंदिर में रुकने के उपरांत शुक्रवार को भगवान् अपने घर लौटते समय जगन्नाथ रथयात्रा का लोगों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। रथयात्रा रामगंज निकलकर राज्य मार्ग पेट्रोल पंप चौराहा, न्यायालय चौराहा पलकमती नदी पुल, मुख्य बाजार, पुराने पुलिस थाने, कन्या शाला, बिहारी चौक से होकर पुनः मिश्र जी के मंदिर पहुंची। शारदा सेवा संघ के तत्वावधान में निकली। जगन्नाथ रथयात्रा में पंडित प्रकाश मनमोहन मुद्गल प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी सदस्य सुश्री राजो मालवीय,वरिष्ठ समाजसेवी कन्नूलाल अग्रवाल, पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय, जगदीश भावसार,माधव भावसार, समाजसेवी हरगोविंद सिंह पुरबिया, नगर

पंचायत परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल,पूर्व पार्षद लक्ष्मी नारायण सोनी,अश्वनी सरोज, विजय छाबड़िया नन्नू भैया,आकाश रघुवंशी वकील प्रांजल तिवारी, सेवानिवृत्त फौजी नीलम पटेल, सेवानिवृत्त फौजी अजय सोनी नीरज चौधरी, गोलू सोनी, सेवादल के इरफान खान सुरेन्द्र चौधरी, सहित मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिकों के अलावा धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं शामिल थे। इस रथयात्रा की उल्लेखनीय बात यह थी कि एक वाहन के के अन्दर बैठे युवक श्रद्धालुओं को वितरण करते चल रहे थे। लेकिन उससे बड़ी उल्लेखनीय बात यह रथयात्रा में प्रसाद आदिवासी अंचलों से लाए गए खारा के हरे पत्तों में दिया जा रहा था। जो कहीं न कहीं पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता रहा। वहीं रथयात्रा में धार्मिक उद्घोष होता रहा कि नीलांचल वाले मेरी नैया है तो हवाले,तू न संभाले तो कौन संभाले। वहीं पूर्व फौजी अजय सोनी शंख ध्वनि करते रथयात्रा में चल रहे थे। यह भी उल्लेखनीय है कि रथयात्रा में मातृशक्ति की लाल एवं पीली साड़ियां पहने हुई थी। इसके की मातृशक्ति पगड़ी धारण किए हुई थी। वहीं एक युवती पगड़ी पहनाकर घोड़े पर सवार होकर रथयात्रा में चल रही थी।

'वाराणसी' के कैनवास पर प्रियंका की वापसी

वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा का परचम लहराने के बाद भारतीय सिनेमा में वापसी कर रही प्रियंका चोपड़ा अपनी आगामी मेगा-बजट एक्शन-एडवेंचर फिल्म 'वाराणसी' को लेकर बेहद उत्साहित हैं। मास्टर-स्टोरीटेलर एसएस राजामौली के निर्देशन में बन रही इस महत्वाकांक्षी परियोजना को प्रियंका ने अपने करियर का सबसे अनूठा और बड़ा प्रोजेक्ट बताया है। लगभग 14 महीनों से लगातार इस फिल्म की शूटिंग में व्यस्त प्रियंका का कहना है कि जिस तरह का विजन और भव्य कल्पना शक्ति राजामौली के पास है, वैसा अनुभव उन्हें अब तक के करियर में कभी नहीं मिला।

फिल्म से जुड़ी नई जानकारियों और सामने आई नई झलकियों के अनुसार, 'वाराणसी' एक टाइम-ट्रैवल आधारित वैश्विक एक्शन-एडवेंचर है, जो पौराणिक गाथाओं और आधुनिक विज्ञान-रोमांच का संगम प्रस्तुत करती है। यह कहानी केवल भारत की पवित्र नगरी वाराणसी तक सीमित न रहकर अफ्रीका, अंटार्कटिका और विभिन्न महाद्वीपों तक की यात्रा कराती है। फिल्म में प्रियंका चोपड़ा 'मंदाकिनी' नाम का एक शक्तिशाली और बहुआयामी किरदार निभा रही हैं, जो बोल्ड, एक्शन-ओरिएंटेड और बेहद निडर अंदाज़ में पर्दे पर नजर आएगा। हाल ही में सामने आई तस्वीरों में प्रियंका के दो एकदम अलग रूप देखने को मिले हैं, एक तरफ जंगलों के बीच उनका बेपरवाह और ऊर्जावान अवतार, वहीं दूसरी ओर ब्लैक आउटफिट में उनका बेहद गंभीर, तीखा और स्टनिंग एक्शन लुक। हाल ही में अपनी तैयारियों और शूटिंग के अनुभवों को साझा करते हुए प्रियंका ने मजाकिया लहजे में बताया कि फिल्म में उन्होंने कई शानदार स्लो-मोशन जंप्स और उच्च स्तरीय एक्शन सीक्वेंस किए हैं, जो उनके लिए एक बिल्कुल नया अनुभव रहा। इसके साथ ही उन्होंने भारतीय सिनेमा में वापसी के अवसर पर निर्देशक से एक भव्य और यादगार डांस नंबर शामिल करने की गुजारिश की थी। खबरें हैं कि राजामौली ने उनकी इस मांग को पूरा करते हुए महेश बाबू और प्रियंका के साथ एक विशाल और ऊर्जा से भरपूर डांस सीक्वेंस भी फिल्माया है।

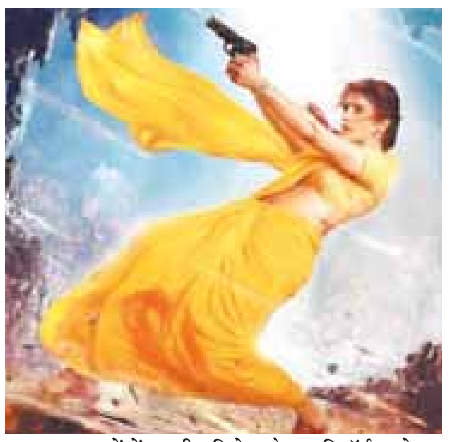

एसएस दुर्गा आर्ट्स और शोइंग बिजनेस के बैनर तले लगभग 1,400 करोड़ रुपये के ऐतिहासिक बजट से तैयार हो रही यह फिल्म कई मायनों में भारतीय सिनेमा के नए रिकॉर्ड गढ़ने जा रही है। यह न केवल भारत की पहली बल्कि गैर-अंग्रेजी भाषा की ऐसी पहली अंतरराष्ट्रीय फिल्म है जिसे विशेष रूप से 1.43:1 आईमैक्स फॉर्मेट में शूट किया जा रहा है। फिल्म का संगीत ऑस्कर विजेता एमएम कीरावनी तैयार कर रहे हैं।

कास्टिंग की बात करें तो 'वाराणसी' में प्रियंका चोपड़ा के साथ साउथ सुपर स्टार महेश बाबू 'रुद्र' के मुख्य किरदार में हैं, जो त्रेता युग से लेकर कलयुग तक की समय-यात्रा से जुड़ी इस कहानी का केंद्र हैं। वहीं मलयालम सिनेमा के दिग्गज अभिनेता पृथ्वीराज सुकुमारन इस महागाथा में 'कुंभ' नामक एक बेहद खतरनाक और ताकतवर खलनायक की भूमिका निभा रहे हैं।

फिल्म के प्रमुख और चुनौतीपूर्ण एक्शन दृश्यों का शेड्यूल सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है तथा शेष हिस्सों की शूटिंग इस वर्ष के अंत तक समेटने की योजना है, जिसके बाद इसके जटिल विजुअल इफेक्ट्स (वीएफएक्स) और पोस्ट-प्रोडक्शन का काम शुरू होगा। राजामौली का विशाल विजन, महेश बाबू-प्रियंका चोपड़ा की पहली ऑनस्क्रीन जोड़ी और टाइम-ट्रैवल का अनोखा कॉन्सेप्ट इस फिल्म को वर्ष 2027 की सबसे बहुप्रतीक्षित वैश्विक रिलीज बनाता है।

रियल बॉक्स

'ओटीटी' के चौखट पर सितारों का जमघट

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

भारतीय मनोरंजन के इतिहास में पिछला कुछ समय बदलाव की एक ऐसी आंधी लेकर आया, जिसने पारंपरिक सिनेमा की दीवारों को हिलाकर रख दिया। इस बदलाव का केंद्र बिंदु बना डिजिटल प्लेटफॉर्म, जिसे आम बोलचाल में 'ओवर द टॉप' यानी 'ओटीटी' कहा जाता है। इसने न केवल दर्शकों के मनोरंजन का अंदाज बदला, बल्कि दशकों से चले आ रहे उस तिलिस्म को भी तोड़ दिया जिसे 'स्टारडम' कहा जाता था। यह मनोरंजन की दुनिया में एक युगांतरकारी और क्रांतिकारी घटना है। यही वजह है कि आज फिल्मों से ज्यादा वेब सीरीज पसंद की जा रही है। लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि सिनेमा के बड़े सितारे भी ओटीटी की चौखट पर लाइन लगाकर खड़े हैं।

मनोरंजन की दुनिया में ओटीटी (ओवर द टॉप) बड़ा बदलाव है। इसकी नींव उस दौर में पड़ी, जब पूरी दुनिया एक अनचाहे संकट से जूझ रही थी। कोरोना महामारी के उस भयावह काल में जब लोग अपने घरों में बंद होने को मजबूर थे, सिनेमाघर बंद हो चुके थे। अनिश्चितता के उस माहौल में मानसिक शांति और मनोरंजन के लिए लोगों के पास केवल मोबाइल फोन और टीवी स्क्रीन ही सहारा थीं। संकट के इस दौर में डिजिटल प्लेटफॉर्म ने अपनी उपस्थिति को मजबूती से दर्ज कराया। जो दर्शक पहले केवल ढाई घंटे की मसाला फिल्मों के आदी थे, उन्हें घर बैठे ऐसी कहानियों का स्वाद चखने को मिला। हर सप्ताह नई कहानियां, नए विषय और बिना किसी विज्ञापन के निरंतर चलने वाले मनोरंजन ने दर्शकों को अपनी ओर ऐसा आकर्षित किया कि देखते ही देखते यह प्लेटफॉर्म दर्शकों का चहेता बन गया। कोरोना काल बीतने के बाद भी दर्शकों की यह आदत नहीं बदली, बल्कि इसने पारंपरिक सिनेमा के एकाधिकार को हमेशा के लिए चुनौती दे दी।

एक समय था जब बड़े परदे के कलाकारों के लिए टेलीविजन या किसी छोटे माध्यम पर काम करना उनके स्तर से नीचे माना जाता था। लेकिन, डिजिटल प्लेटफॉर्म की बढ़ती ताकत और इसकी पहुंच ने इस धारणा को पूरी तरह बदल दिया। आज स्थिति यह है कि सिनेमा के बड़े-बड़े अभिनेता और अभिनेत्रियां इस नए माध्यम की वेब सीरीज में काम करने के लिए लालायित दिखाई देने लगे। इसकी शुरुआत तब और बड़ी हो गई जब सैफ अली खान जैसे स्थापित अभिनेता ने 'सैक्रेड गेम्स' और अब 'तांडव' जैसी वेब सीरीज में मुख्य भूमिका निभाकर सबको चौंका दिया। इसके बाद तो जैसे बॉलीवुड के दिग्गजों की कतार लग गई। अनिल कपूर ने 'द नाइट मैनेजर' जैसी चर्चित श्रृंखला में अपनी अदाकारी का जलवा बिखेरा, तो वहीं धक-धक गर्ल कही जाने वाली माधुरी दीक्षित ने 'द फेम गेम' और 'मिसेज देशपांडे' के बाद 'मां बहन' के जरिए इस डिजिटल दुनिया में कदम रखा। इन बड़े नामों के अलावा भी अजय देवगन ने 'रुद्रा' और शाहिद कपूर ने 'फर्जी' जैसी वेब सीरीज से दर्शकों के दिलों पर राज किया। यह बदलाव इस बात का सबूत है कि अब कलाकार पर्दे के आकार से नहीं, बल्कि कहानी की गहराई और उसकी पहुंच से अपनी सफलता को आंक रहे हैं।

इस पूरे परिदृश्य का सबसे खूबसूरत पहलू यह रहा कि इसने सिनेमा की उस वंशवादी और नेपोटिज्म की व्यवस्था पर जमकर चोट की, जहां केवल कुछ खास चेहरों को ही बड़े अवसर मिलते थे। ओटीटी ने पूरी तरह से योग्यता और प्रतिभा को तरजीह दी। इसके फलस्वरूप ऐसे कलाकारों का उदय हुआ, जो आज लोकप्रियता के मामले में किसी भी बड़े फिल्मी सितारे से कम नहीं हैं, बल्कि कई मायनों में उनसे कहीं आगे निकल चुके हैं। इस सूची में सबसे पहला नाम पंकज त्रिपाठी का आता है। 'मिर्जापुर' जैसी वेब सीरीज में कालीन भैया के उनके किरदार ने उन्हें घर-घर में एक घरेलू नाम बना दिया। मनोज बाजपेयी यूं तो सिनेमा में वर्षों से सक्रिय थे, लेकिन 'द फैमिली मैन' के श्रीकांत तिवारी के रूप में उन्हें जो देशव्यापी और वैश्विक लोकप्रियता मिली, वह अभूतपूर्व थी। इसके बाद उन्होंने कई वेब सीरीज में काम किया। इसी तरह 'स्कैम 1992' के जरिए प्रतीक गांधी ने हर्षद मेहता के किरदार में जो जान फूंकी, उसने रातों-रात उन्हें भारतीय मनोरंजन उद्योग का एक बड़ा चेहरा बना दिया। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने भी 'सेक्रेड गेम्स' के गणेश गायतोंडे के रूप में जो पहचान बनाई, उसने साबित कर दिया कि दर्शक अब शक्ल-सूरत से ज्यादा अभिनय की ताकत को सलाम करते हैं। जितेंद्र कुमार ने 'पंचायत' के सचिव जी और 'कोटा फैक्ट्री' के जीतू भैया के रूप में आम मध्यमवर्गीय युवाओं के दिलों में वह जगह बनाई जो शायद बड़े पर्दे के रोमांटिक हीरो भी नहीं बना पाते।

डिजिटल प्लेटफॉर्म की एक और बड़ी विशेषता यह रही कि इन्होंने केवल काल्पनिक अपराध या थ्रिलर कहानियां ही नहीं दिखाई, बल्कि देश के गौरवशाली इतिहास और यहां के औद्योगिक विकास की सच्ची कहानियों को भी पूरी संजीदगी से परदे पर उतारा है। इस कड़ी में एक नई और बेहद चर्चित वेब सीरीज सामने आई, जिसका नाम है 'मेड इन इंडिया : अ टाइटन स्टोरी!' यह श्रृंखला भारत के सबसे भरोसेमंद और प्रतिष्ठित ब्रांड टाटा की घड़ी निर्माण कंपनी 'टाइटन' की वास्तविक निर्माण प्रक्रिया और उसके संघर्ष की कहानी पर केंद्रित है। इस श्रृंखला में जिम सरभ ने ज़ेरक्स देसाई और अनुभवी अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने जेआरडी टाटा की भूमिका को जीवंत किया। इसके अलावा भी कई ऐसी वेब सीरीज आई, जिन्होंने समाज और मनोरंजन जगत पर अपनी गहरी छाप छोड़ी।

दिल्ली के वीभत्स कांड पर आधारित 'दिल्ली क्राइम' ने न केवल दर्शकों को झकझोरा, बल्कि शेफाली शाह जैसी बेहतरीन अभिनेत्री को वह अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण परिवेश और राजनीति को दर्शाती 'मिर्जापुर' ने अली फजल को गुड्डू भैया और दिव्येंदु शर्मा को मुन्ना भैया के रूप में अमर कर दिया। जयदीप अहलावत ने 'पाताल लोक' में हाथी राम चौधरी के अपने किरदार से अभिनय की नई परिभाषा लिखी। केके मेनन ने 'स्पेशल ऑप्स' में एक जासूस अधिकारी के रूप में अपनी कला का लोहा मनवाया। इन सभी श्रृंखलाओं की सफलता यह दर्शाती है कि डिजिटल मंचों ने केवल समय काटने का जरिया नहीं दिया, बल्कि दर्शकों को उत्कृष्ट सिनेमा के अनुभव का हिस्सा बनाया है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ने स्टारडम को खत्म नहीं किया, बल्कि उसने स्टारडम की पुरानी और रूढ़िवादी परिभाषा को भी पूरी तरह बदल दिया है। पहले स्टारडम का मतलब केवल एक आकर्षक चेहरा, बड़े बजट की एक्शन फिल्में और सिनेमाघरों के बाहर लगने वाली कतार होता था। आज स्टारडम का मतलब बेहतरीन अदाकारी, सशक्त संवाद और दर्शक के दिल को छू लेने वाली प्रासंगिक कहानियां हैं। इस माध्यम ने पारंपरिक बड़े फिल्मी सितारों को आत्मनिरीक्षण करने और अपनी अभिनय क्षमता को निखारने पर मजबूर किया, तो वहीं दूसरी तरफ बिना किसी गॉडफादर के आए प्रतिभावान कलाकारों को एक ऐसा प्लेटफॉर्म दिया, जहां वे अपनी कला के दम पर चमक रहे हैं। मनोरंजन की दुनिया में आया यह बदलाव पूरी तरह से प्रगतिशील और क्रांतिकारी है, जिसने दर्शकों को राजा बना दिया है और अभिनय को ही एकमात्र कसौटी घोषित कर दिया है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'सैयारा' के बाद अब अहान पांडे की नई उड़ान

ब्लॉकबस्टर फिल्म 'सैयारा' की ऐतिहासिक सफलता के बाद बॉलीवुड के नए ओवरनाइट सेंसेशन अहान पांडे एक बार फिर परदे पर तहलका मचाने के लिए तैयार हैं। 'सैयारा' के बाद वह अगली बड़ी फिल्म यशराज फिल्म्स के बैनर तले कर रहे हैं। अनटाइटल्ड फिल्म का निर्देशन अली अब्बास जफर कर रहे हैं। इस रोमांटिक-एक्शन ड्रामा फिल्म की रिलीज डेट लॉक कर दी गई।

फिल्ममेकर आदित्य चोपड़ा और निर्देशक अली अब्बास जफर ने इस अनटाइटल्ड फिल्म की थिएट्रिकल रिलीज डेट अगले साल के लिए लॉक की है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म की रिलीज डेट 26 मार्च 2027 की तय की गई। 26 मार्च को गुड फ्राइडे है। यह आदित्य चोपड़ा और अली अब्बास जफर की साथ में पांचवीं फिल्म होगी। आदित्य और अली इससे पहले साथ में मेरे ब्रदर की दुल्हन, गुंडे, सुल्तान और 'टाइगर जिंदा है' जैसी फिल्मों में साथ काम कर चुके हैं। इनमें गुंडे, सुल्तान और 'टाइगर जिंदा है' बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफल साबित हुई। पिछले कुछ महीनों से फिल्म की शूटिंग यूनाइटेड किंगडम में चल रही है। शूटिंग के दौरान सेट से कई तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए, जिससे फिल्म को लेकर दर्शकों की एक्साइटमेंट और बढ़ गई।

अश्नीर की बायोपिक से बाहर हुए आमिर खान

बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, आमिर खान ने 'भारत-पे' के पूर्व सह-संस्थापक अश्नीर ग्रोवर के जीवन पर बनने वाली प्रस्तावित बायोपिक से अपने कदम पीछे खींच लिए। हालांकि, इस विषय पर अभी तक आमिर खान, फिल्म के निर्देशक राहुल मोदी या निर्माताओं की ओर से कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई।

इस साल की शुरुआत में आई खबरों के अनुसार, अश्नीर ग्रोवर की चर्चित और विवादित जिंदगी पर बनने वाली इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका निभाने वाले थे। जबकि, श्रद्धा कपूर फीमेल लीड के तौर पर चुनी गई थीं। नई रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि आमिर खान और निर्देशक के बीच फिल्म की स्क्रिप्ट और क्रिएटिव विजन को लेकर सहमति नहीं बन सकी। आमिर खान कहानी को अपने नजरिए से और अधिक प्रभावशाली बनाना चाहते थे, लेकिन बात न बनने पर उन्होंने प्रोजेक्ट से अलग होना ही बेहतर समझा।

अभिनेता के बाहर होने के बाद भी श्रद्धा कपूर इस प्रोजेक्ट से जुड़ी हुई हैं। बताया जा रहा है कि वे फिल्म में अश्नीर ग्रोवर की पत्नी माधुरी जैन ग्रोवर की भूमिका निभा सकती हैं। इसके साथ ही चर्चा यह भी है कि श्रद्धा एक प्रमुख प्रोडक्शन हाउस के साथ मिलकर इस फिल्म के निर्माण का जिम्मा भी संभाल सकती हैं। आमिर खान के जाने के बाद अब मेकर्स अश्नीर ग्रोवर के किरदार के लिए किसी युवा अभिनेता की तलाश में जुट गए हैं। जल्द ही नई स्टारकास्ट का ऐलान किया जा सकता है। शार्क टैंक इंडिया और 'भारत-पे' विवादों के बाद सुर्खियों में आए अश्नीर ग्रोवर की जिंदगी पर आधारित इस बायोपिक को लेकर दर्शकों में उत्सुकता बरकरार है।

परदे पर संघर्ष, राजनीति और बदलाव की अधूरी कहानी

अशोक जोशी

देश में जब भी छात्र आंदोलन तेज होते हैं, उनका असर केवल विश्वविद्यालयों या सड़कों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि साहित्य, रंगमंच और सिनेमा जैसे रचनात्मक माध्यमों तक भी पहुंचता है। भारत में छात्र आंदोलनों का इतिहास

स्वतंत्रता संग्राम से लेकर जेपी आंदोलन, मंडल आंदोलन और आज के विश्वविद्यालयों में चल रहे विरोध प्रदर्शनों तक फैला हुआ है। इन आंदोलनों ने लोकतंत्र, शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक न्याय और राजनीतिक चेतना पर लगातार सवाल उठाए हैं। स्वाभाविक रूप से हिंदी सिनेमा ने भी समय-समय पर इन मुद्दों को अपने कथानक का हिस्सा बनाया है।

खुद छात्र आंदोलनों पर बनी फिल्मों की संख्या बहुत अधिक नहीं है और जिन फिल्मों ने इस विषय को छुआ भी है, उनमें अधिकांश ने आंदोलन की पृष्ठभूमि का उपयोग तो किया, लेकिन उसके सामाजिक और वैचारिक पक्ष की गहराई तक कम ही पहुंच सकीं। हिंदी सिनेमा में छात्र आंदोलन कभी कॉलेज चुनावों के रूप में दिखाई देते हैं, कभी भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ युवाओं के विद्रोह के रूप में और कभी सामाजिक असमानता तथा आरक्षण जैसे संवेदनशील विषयों के संदर्भ में। इन फिल्मों में युवा ऊर्जा, आदर्शवाद और व्यवस्था से टकराने की बेचैनी तो दिखाई देती है, लेकिन बहुत कम फिल्में यह बताती हैं कि छात्र आंदोलन आखिर किस दिशा में समाज को ले जा सकते हैं।

भारतीय राजनीति में 1974 का जेपी आंदोलन छात्र शक्ति की सबसे बड़ी मिसाल माना जाता है। बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार के खिलाफ शुरू हुआ यह आंदोलन बाद में आपातकाल के विरोध का बड़ा आधार बना। इस दौर ने देश की राजनीति को बदल दिया, लेकिन हिंदी सिनेमा ने इस ऐतिहासिक परिवर्तन को बहुत सीमित रूप में ही चित्रित किया। फिल्मकारों ने आंदोलन की वैचारिक जटिलताओं की बजाय उसकी राजनीतिक पृष्ठभूमि को अधिक महत्व दिया। यही कारण है कि छात्र राजनीति पर आधारित अधिकांश फिल्में किसी न किसी व्यक्तिगत संघर्ष या सत्ता संघर्ष तक सिमट जाती हैं।

राम गोपाल वर्मा की 'शिवा' इस विषय पर बनी सबसे प्रभावशाली फिल्मों में गिनी जाती है। कॉलेज परिसर में बढ़ते अपराध, बाहुबल और राजनीतिक हस्तक्षेप को जिस यथार्थवादी शैली में फिल्म ने प्रस्तुत किया, उसने छात्र राजनीति की एक नई तस्वीर दर्शकों के सामने रखी। फिल्म का नायक किसी विचारधारा का प्रतिनिधि नहीं बनता, बल्कि वह हिंसा और अपराध से मुक्त शैक्षणिक वातावरण की लड़ाई लड़ता है। यही कारण है कि 'शिवा' आज भी छात्र राजनीति पर बनी सबसे महत्वपूर्ण फिल्मों में शामिल की जाती है।

मणिरत्नम की 'युवा' ने छात्र आंदोलन को तीन अलग-अलग युवाओं की जिंदगी के माध्यम से देखने का प्रयास किया। फिल्म में कोलकाता की छात्र राजनीति, सत्ता का हस्तक्षेप, भ्रष्टाचार और आदर्शवाद के बीच का संघर्ष दिखाई देता है। अजय देवगन, विवेक ओबरॉय और अभिषेक बच्चन के किरदार अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमियों से आते हैं, लेकिन अंततः राजनीति उन्हें एक साझा मोड़ पर ले आती है। फिल्म यह संकेत देती है कि राजनीति से दूरी बनाकर परिवर्तन संभव नहीं है, बल्कि व्यवस्था के भीतर रहकर भी बदलाव की कोशिश की जा सकती है। हालांकि फिल्म समाधान देने की बजाय सवाल अधिक छोड़ती है।

अनुराग कश्यप की 'गुलाल' छात्र राजनीति को सबसे तीखे और वैचारिक रूप में प्रस्तुत करती है। राजस्थान की विश्वविद्यालयी राजनीति के बहाने फिल्म जातीय पहचान, क्षेत्रीय अस्मिता, सत्ता संघर्ष और हिंसा की परतें खोलती है। यहां छात्र आंदोलन केवल चुनाव जीतने का माध्यम नहीं रह जाता, बल्कि सत्ता प्राप्ति की महत्वाकांक्षा का उपकरण बन जाता है। यही कारण है कि 'गुलाल' मनोरंजन से अधिक राजनीतिक विमर्श की फिल्म बन जाती है।

प्रकाश झा की 'आरक्षण' ने शिक्षा और सामाजिक न्याय के सबसे विवादास्पद प्रश्न को केंद्र में रखा। फिल्म में आरक्षण के पक्ष और विपक्ष दोनों की दलीलें दिखाई गईं। कॉलेज परिसर में पैदा होने वाले तनाव, छात्रों के बीच बढ़ती वैचारिक दूरी और शिक्षा के व्यवसायीकरण को भी कहानी का हिस्सा बनाया गया। हालांकि फिल्म अपने उद्देश्य के अनुरूप व्यापक बहस पैदा नहीं कर सकी, फिर भी उसने यह स्पष्ट किया कि छात्र आंदोलन केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव के भी वाहक होते हैं। आनंद एल. राय की 'रांझणा' पहली नजर में प्रेम कहानी लगती है, लेकिन उसके दूसरे हिस्से में विश्वविद्यालय की राजनीति और छात्र आंदोलनों की महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। छात्र नेतृत्व, चुनाव, जनसभाएं और किसानों के मुद्दों से जुड़ी राजनीति यह बताती है कि विश्वविद्यालय केवल शिक्षा के केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रयोगशाला भी होते हैं।

हाल के वर्षों में आई 'हुड़दंग' ने मंडल आयोग के दौर और आरक्षण विरोधी आंदोलनों की पृष्ठभूमि में युवाओं की भावनाओं को चित्रित किया। फिल्म ने प्रेम कहानी के साथ सामाजिक समानता, अवसरों की असमानता और छात्र राजनीति के प्रभाव को जोड़ने का प्रयास किया। हालांकि इसकी प्रस्तुति व्यावसायिक फिल्मों के ढांचे से पूरी तरह बाहर नहीं निकल पाई। यदि छात्र आंदोलनों के व्यापक अर्थ को समझना हो तो 'थ्री इडियट्स' का उल्लेख भी जरूरी है। यह फिल्म किसी राजनीतिक आंदोलन की कहानी नहीं कहती, लेकिन शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ छात्रों के मौन विद्रोह को बेहद प्रभावशाली ढंग से सामने लाती है। अंकों की दौड़, रटंत शिक्षा और रोजगार केंद्रित व्यवस्था पर सवाल उठाकर फिल्म बताती है कि परिवर्तन केवल सड़कों पर उतरने से नहीं, बल्कि सोच बदलने से भी आता है।

इसी तरह 'गब्बर इज बैक' का नायक एक शिक्षक है, जो भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष करता है। यद्यपि फिल्म सीधे छात्र आंदोलन पर आधारित नहीं है, लेकिन शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी के संबंध को रेखांकित करती है। फिल्म यह भी स्वीकार करती है कि व्यवस्था से लड़ाई के लिए सही उद्देश्य के साथ सही साधनों का होना भी आवश्यक है। दिलचस्प तथ्य यह है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी छात्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के दौरान अनेक छात्रों ने पढ़ाई छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। बाद के वर्षों में इन्हीं युवाओं में से कई लोग साहित्य, पत्रकारिता और सिनेमा से जुड़े। इसलिए भारतीय सिनेमा और छात्र आंदोलनों का संबंध केवल विषयगत नहीं, बल्कि ऐतिहासिक भी है। इसके बावजूद हिंदी सिनेमा अभी तक छात्र आंदोलनों की पूरी जटिलता को ईमानदारी से प्रस्तुत नहीं कर पाया है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि छात्र आंदोलन अक्सर राजनीतिक दलों से जुड़े होते हैं। ऐसे में किसी भी फिल्म का एक पक्ष दूसरे पक्ष के विरोध का कारण बन सकता है। यही कारण है कि अधिकांश फिल्मकार इस विषय को सतही स्तर पर छूकर आगे बढ़ जाते हैं। वे आंदोलन के भावनात्मक पक्ष को तो दिखाते हैं, लेकिन उसके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रभावों की गहराई में जाने से बचते हैं।

आज जब देश और दुनिया के विश्वविद्यालयों में छात्र शिक्षा, रोजगार, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक अधिकारों जैसे मुद्दों पर लगातार आवाज उठा रहे हैं, तब यह विषय पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। हिंदी सिनेमा के पास ऐसे अनेक अवसर हैं, जहां वह केवल विरोध प्रदर्शन नहीं, बल्कि छात्र आंदोलनों के कारणों, उनके परिणामों और उनके भीतर मौजूद वैचारिक संघर्षों को भी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत कर सकता है। जिस दिन कोई फिल्म छात्र आंदोलन को राजनीतिक शोर से ऊपर उठाकर समाज परिवर्तन की गंभीर प्रक्रिया के रूप में चित्रित करेगी, उसी दिन यह विषय हिंदी सिनेमा में अपनी वास्तविक ऊंचाई प्राप्त कर सकेगा। फिलहाल पर्दे पर छात्र आंदोलन दिखाई तो देते हैं, लेकिन उनकी पूरी कहानी अभी भी कही जानी बाकी है।

कल थी, कल रहेगी... साइकल!

राइट क्लिक
प्रकाश पुरोहित

शरीर और साइकल की यह समानता है कि इन पर अपना पूरा अधिकार रहता है। शरीर में कहीं भी कसर होती है तो हमें पता चल जाता है और उसका इलाज हम तलाश लेते हैं। वैसे ही साइकल के बारे में, यदि खुद की है तो, सब होता है कि चेन क्यों उतर रही है या आगे का पहिया कहां टकरा रहा है या पहिया डग क्यों खा रहा है या मडगार्ड या चेन कवर से आवाज क्यों आ रही है, ऐसी और भी तमाम खामियां, रस्ते चलते हम ठीक कर सकते हैं। साइकल रिश्वतखोरी या भ्रष्टाचार की परतें चढ़ने लगी है तो साइकल ही है, जो चर्बी छांट देती है .

यह सही है कि आज हर जगह मोटरसाइकल ही ज्यादा नजर आती है, इसलिए अंग्रेजी की मोटरबाइक को सुविधा के लिए हिंदी में 'बाइक' कहने पर किसी को एतराज नहीं होता। कल ही कोई मिलने आया था, पूछ लिया 'कैसे आये?' तो बताया बाइक से। उसे धन्यवाद दिया और शाबाशी भी कि इस आधुनिक यानी फटफटी के जमाने में साइकल चलाते हो। वह बुरा मान गया और बोला- ''बाइक यानी मोटरबाइक।'' मुझे पता ही नहीं था कि अब यह फटफटी का डिमोशन हुआ है या साइकल का प्रमोशन। यह मुझे अति-विनम्रता भी लगती है कि अच्छी-खासी मोटरबाइक को लोग संकोच में बाइक कहने लगे हैं।

यह भी चिंतन का विषय है कि जब शहरों की सड़कों पर पैदल के लिए फुटपाथ नहीं है तो

कभी सपने का विषय होती थी कि हर रात नई साइकल नजर आती थी। नई से यहां मतलब अलग ब्रांड की, नई साइकल तो कभी सपने में भी नहीं आई। सेकंड-हेंड ही नई होती थी।

अब जमाना बदल गया है... या तो सम्पन्न परिवार के नौनिहाल बगीचे या लॉन में साइकल चलाते हैं या फिर बड़े जब चलाते हैं तो मंशा यही रहती है कि लोग देखें और इस सादगी पर मर-मिटें। हर आते-जाते को हसरत से देखते हैं कि देख रहा है या नहीं। जो कार में सीट-बेल्ट या मोटरबाइक पर हेलमेट नहीं लगाते हैं, वे भी साइकल पर यूं पूरी धज के साथ निकलते हैं कि साइकल पर भले ही नजर ना जाए, चलने वाले को तो गौर से देखने लगता है। साइकल घर में है और चला रहे हैं, यह तो मजबूरी है, लेकिन कार है, फटफटी है और फिर भी कोई साइकल लिए जा रहा है, फिजूल ही सही, तो यह क्रेडिटेबल है।

यदि कोई धन्ना सेठ है और चाहता है कि उसकी सादगी के कसीदे पढ़े जाएं तो साइकल ही उसका उद्धार कर सकती है। हफ्ते में एक रोज भी साइकल चला ले दो-चार किलोमीटर तो उसकी लोकप्रियता लंबी दूरी छूने लगती है, यानी अब साइकल गरीबी का प्रतीक नहीं रही, अमीरी में सादगी के काम आती है, फिर साइकल भले ही मोबाइक यानी मोटरसाइकल से भी महंगी क्यों ना हो। चुनाव के समय जैसे नेता पैदल चलते हाथ जोड़ते रहते हैं ना, वैसे ही छवि पर

फिर इन बाइक यानी साइकल वालों के लिए जगह कहां से निकल आती है। जब इस बारे में साइकल की वजह से जग-प्रसिद्ध से बात की तो उसका कहना था, जहां चाह, वहां राह। हम सूरज उगने का इंतजार नहीं करते हैं। मुंह अंधेरे ही निकल जाते हैं साइकल लेकर। सिवाय कुत्ते और पुलिस के कोई नहीं मिलता। अब चोर भी हों तो इतनी फुर्सत कहां कि चोर और पुलिस में फर्क करते फिरें। यह भी बताने से नहीं चूके कि दिन में साइकल चला कर मरना थोड़े ही है। सेहत के लिए चलाते हैं, मजबूरी के लिए नहीं। वैसे भी हमारी साइकल, बाइक से कम थोड़े ही है, पूरे डेढ़ लाख की है।

नेता को भी जब लगता है कि बहुत दिनों से कोई तमाशा नहीं किया तो वह या तो कदम साहब के सहारे हो जाता है या फिर साइकल को मोहरा बना निकल पड़ता है, बे-मकसद! इस देश में रोजगार की कमी का सबसे बड़ा फायदा यही उठाया जाता है कि कोई भी ऐसी हरकत पटक दीजिए कि फुरसतिए दौड़े चले आएं। इन्हें रोजनदारी की भी जरूरत नहीं, मुफ्त में ही माहौल बना देते हैं तो नेता के पिताजी का क्या जाता है चार पैडल मारने में। बताने को हो जाता है कि फलां जगह से फलां जगह तक साइकल यात्रा की थी। जनता समझ जाती है कि अब क्रांति होकर रहेगी। यह सब साइकल की बदौलत ही संभव है, लेकिन इस सबके बावजूद साइकल को कोई बाइक नहीं कहता, ना जाने क्यों!

निःसंतान दंपत्तियों की उम्मीद की किरण आईवीएफ

और क्या कह रही है ज़िंदगी
ममता तिवारी
लेखक साहित्यकार हैं।

क्या रजोनिवृत्ति के बाद आईवीएफ हो सकता है? हाँ, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि महिला की उम्र, स्वास्थ्य और गर्भाशय की स्थिति कैसी है। यदि महिला के अपने अंडाणु समाप्त हो चुक हों तब किसी डोनर (दाता) के अंडाणु लिए जाते हैं। पति के शुक्राणु से भ्रूण बनाया जाता है। हार्मोन दवाओं से गर्भाशय को तैयार किया जाता है। फिर भ्रूण को गर्भाशय में स्थापित किया जाता है। यानि, रजोनिवृत्ति के बाद भी गर्भाशय यदि स्वस्थ है, तो डोनर एग की मदद से गर्भधारण संभव हो सकता है।

मं आज हमारे देश में आईवीएफ पद्धति से बच्चे आसानी से पैदा हो रहे हैं पर फिर भी इसकी पद्धति, कानून, परेशानियों जैसे तमाम प्रश्नों के उत्तर आसानी से नहीं मिल पा रहे हैं। इस संदर्भ में मैंने अपने शहर की गायनेकॉलोजिस्ट से चर्चा की फिर संतान के लिये इच्छुक दंपत्तियों से। यूँ तो आईवीएफ क्लिनिक में इसकी काउंसिलिंग की जाती है पर दंपत्तियों के संकोच को देखते हुये मैंने एक प्रश्नावली तैयार की है।

आईवीएफ (इन विट्रो फर्टिलाइजेशन) का अर्थ है कि महिला के अंडाणु और पुरूष के शुक्राणु को शरीर के बाहर प्रयोगशाला में मिलाकर भ्रूण बनाया जाता है। फिर उस भ्रूण को महिला के गर्भाशय में स्थापित किया जाता है ताकि सामान्य गर्भावस्था हो सके।

क्या रजोनिवृत्ति के बाद आईवीएफ हो सकता है? हाँ, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि महिला की उम्र, स्वास्थ्य और गर्भाशय की स्थिति कैसी है। यदि महिला के अपने अंडाणु समाप्त हो चुक हों तब किसी डोनर (दाता) के अंडाणु लिए जाते हैं। पति के शुक्राणु से भ्रूण बनाया जाता है। हार्मोन दवाओं से गर्भाशय को तैयार किया जाता है। फिर भ्रूण को गर्भाशय में स्थापित किया जाता है। यानि, रजोनिवृत्ति के बाद भी गर्भाशय यदि स्वस्थ है, तो डोनर एग की मदद से गर्भधारण संभव हो सकता है।

क्या 60 वर्ष की उम्र में आईवीएफ करवाया जा सकता है? चिकित्सकीय रूप से कुछ मामलों में संभव हो सकता है, लेकिन यह बहुत सावधानी से तय किया जाता है।

60 वर्ष की उम्र में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग, गर्भावस्था की जटिलताओं का खतरा काफी बढ़ जाता है।

भारत में सहायक प्रजनन से जुड़े कानूनों के अनुसार, महिला की आयु की एक ऊपरी सीमा निर्धारित की गई है। वर्तमान नियमों के अनुसार आईवीएफ जैसी सेवाएँ सामान्यतः 21 से 50 वर्ष की महिलाओं और 21 से 55 वर्ष के पुरूषों के लिए स्वीकृत है। इसलिए 60 वर्ष की महिला के लिए भारत में नियमित रूप से आईवीएफ कराना सामान्यतः कानूनी रूप से संभव नहीं होता।

क्या आईवीएफ से जुड़वाँ बच्चे होने की संभावना रहती है? हाँ। यदि डॉक्टर एक से अधिक भ्रूण गर्भाशय में स्थापित करते हैं तो जुड़वाँ या कभी-कभी तीन बच्चों की संभावना बढ़ जाती है।

क्या सरोगेसी और आईवीएफ एक ही चीज़ है? नहीं। आईवीएफ एक तकनीक है, जिसमें भ्रूण प्रयोगशाला में बनाया जाता है। सरोगेसी में वही भ्रूण किसी दूसरी महिला के गर्भाशय में विकसित किया जाता है।

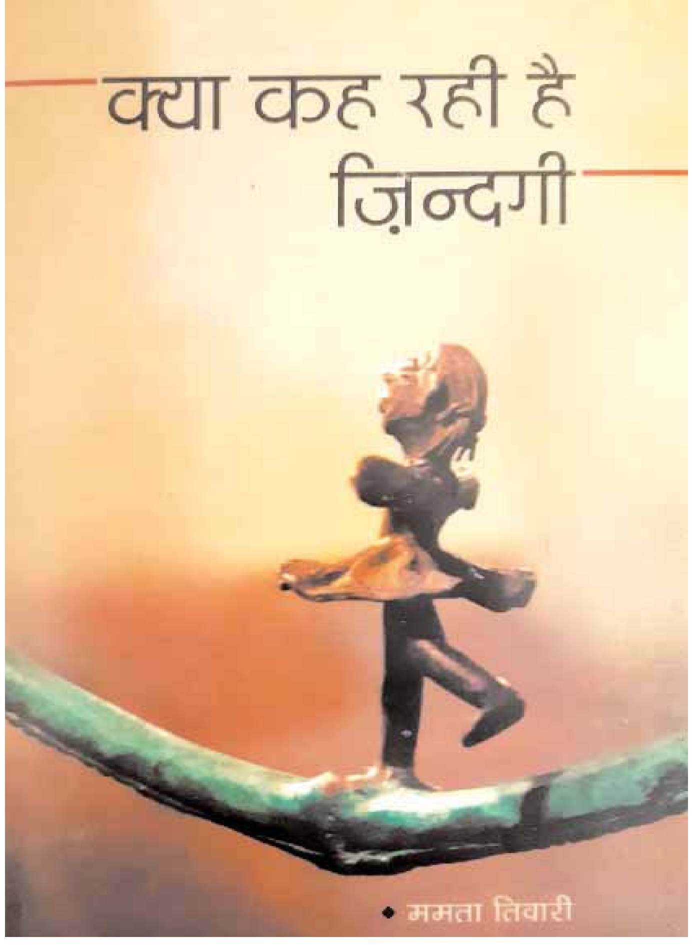

यानी आईवीएफ एक प्रक्रिया है, जबकि सरोगेसी गर्भधारण का एक अलग तरीका है। कई बार सरोगेसी में भी आईवीएफ का उपयोग किया जाता है।

क्या आईवीएफ सुरक्षित है? हाँ, अधिकांश मामलों में आईवीएफ एक सुरक्षित प्रक्रिया मानी जाती है। यह लगभग 45 वर्षों से दुनिया भर में सफलतापूर्वक की जा रही है। लाखों स्वस्थ बच्चे आईवीएफ से जन्म ले चुके हैं। हालाँकि, किसी भी चिकित्सा प्रक्रिया की तरह इसमें कुछ जोखिम हो सकते हैंर जैसे, संक्रमण या हल्का रक्तस्त्राव, जुड़वाँ या तीन बच्चों की संभावना, गर्भपात का जोखिम प्राकृतिक गर्भधारण के समान ही होता है और उम्र के साथ बढ़ता है।

आईवीएफ उन दंपत्तियों के लिए उपयुक्त हो सकता है जहां महिला के दोनों फैलोपियन ट्यूब बंद हों। पुरूष के शुक्राणुओं की संख्या या गुणवत्ता बहुत कम हो। महिला में एंडोमेट्रियोसिस हो। कई वर्षों से बिना कारण गर्भधारण न हो रहा हो। महिला की उम्र अधिक हो और प्राकृतिक गर्भधारण कठिन हो। आनुवांशिक ; बीमारी से बचने के लिए भ्रूण की जाँच करनी हो। कैंसर के उपचार के बाद प्रजनन क्षमता प्रभावित हुई हो।

आईवीएफ की सफलता कितनी होती है? यह मुख्य रूप से महिला की उम्र पर निर्भर करती है। औसतन 35 वर्ष से कम की उम्र में लगभग 45.55 प्रतिशत प्रति आईवीएफ चक्र तथा 40 वर्ष से अधिक उम्र में लगभग 10.20 प्रतिशत की सफलता की दर है। कई बार पहले चक्र में सफलता नहीं मिलती, लेकिन दूसरे या तीसरे चक्र में गर्भधारण हो जाता है।

एक आम सवाल होता है कि आईवीएफ में कितना खर्च आता है?

भारत में एक आईवीएफ का खर्च शहर और अस्पताल के अनुसार बदलता है। आमतौर पर लगभग 1.5 लाख से 3 लाख रुपए प्रति चक्र का खर्च आता है। यदि डोनर एग, डोनर स्पर्म, आनुवंशिक जाँच या भ्रूण फ्रीजिंग जैसी अतिरिक्त प्रक्रियाएँ हों, तो खर्च और बढ़ सकता है।

आज आईवीएफ चिकित्सा विज्ञान की सबसे सफल उपलब्धियों में से एक है। जिन दंपत्तियों को पहले संतान प्राप्ति असंभव लगती थी, उनमें से बहुत-से लोग आज इसके माध्यम से माता-पिता बन पाए हैं। फिर भी, यह समझना ज़रूरी है कि आईवीएफ सफलता की गारंटी नहीं है। इसकी सफलता व्यक्ति की उम्र, स्वास्थ्य, अंडाणु और शुक्राणु की गुणवत्ता, गर्भाशय की स्थिति और उपचार केंद्र के अनुभव पर निर्भर करती है। इसलिए उपचार शुरू करने से पहले एक अनुभवी प्रजनन विशेषज्ञ से विस्तृत परामर्श और सभी आवश्यक जाँच कराना सबसे महत्वपूर्ण कदम होता है।

मांडू... पत्थरों पर समय के हरे हस्ताक्षर

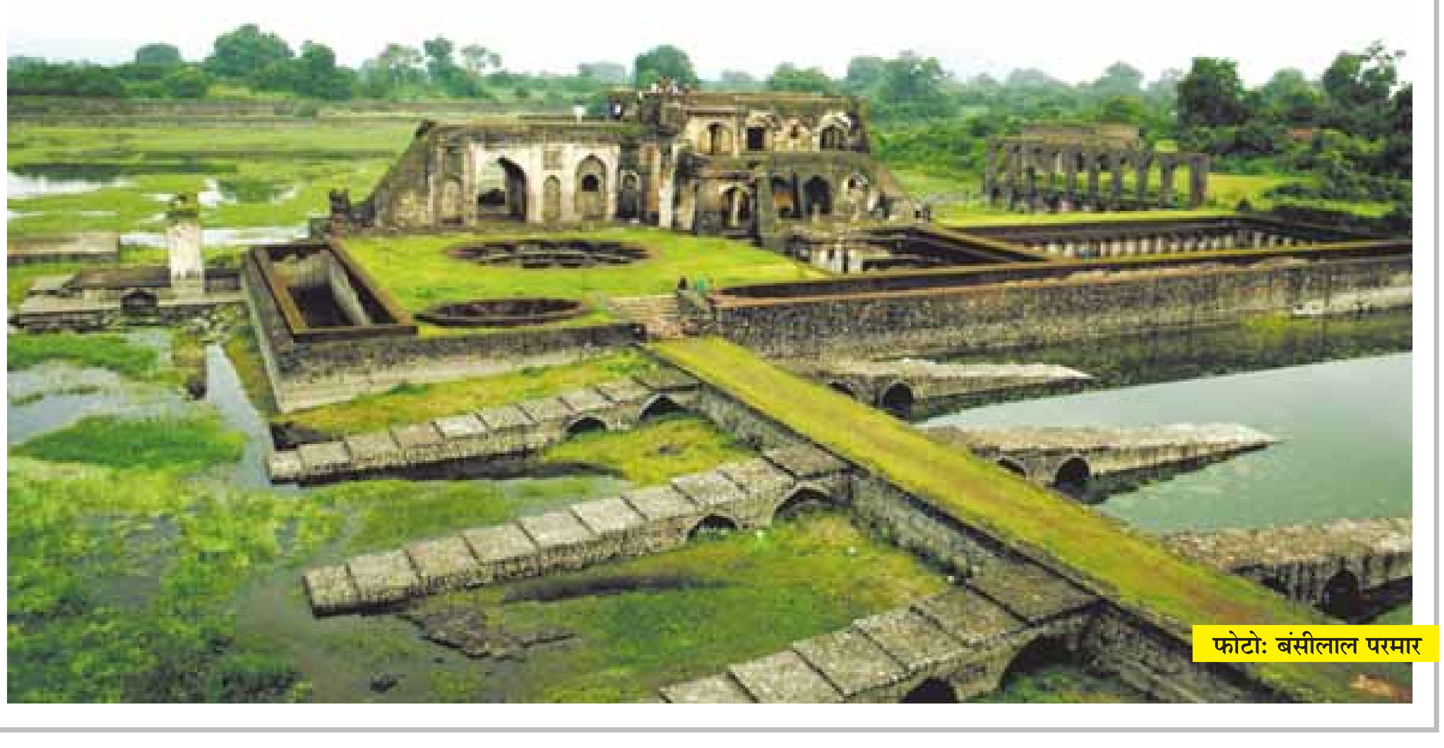

फोटो: बंसीलाल परमार

असल इम्तहान तो जिंदगी का है... !

दृष्टिकोण
❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

पीएमटी देकर घर आई। मिलिंद खरे सर (खरे इंस्टिट्यूट) ने आंसर शीट चेक की और कहा अच्छा किया है, उम्मीद रखो, हो जाएगा , लेकिन जब रिजल्ट आया तो पता चला दो नंबर कम आए, उसके बाद जो सलाह और बातें शुरू हुईं, दुःख देने वाली थीं। पहले तो आरक्षण को कोसा जाने लगा। फिर सलाह मिली कि दोबारा जांच करवा लो, आराम से निकल जाएगा।

लोग सवाल उठाते ही नहीं थे, इसलिए जो सवाल उठाता था सीट देकर उसे चुप करवा देते थे। यह बात भी सभी को पता थी, लेकिन कोई हल्ला करना नहीं चाहते था, कोई हंगामा न हो, बस चुपचाप शांति से जो हो रहा है, उसे मान लो। मैंने तय किया कि अब पीएमटी ही नहीं देना, कुछ ऐसे भी थे जो इस मायाजाल में ऐसे फंसे कि कुछ बरस इसी में घूमते रहे।

देवी अहल्या विश्वविद्यालय ने नए कोर्स शुरू किए, लेकिन कॉलेज उन्होंने खोले, जिनके पास न तो साधन थे, न ही इन नए कोर्स की कोई खास जानकारी। साल भर पढ़ने के बाद समझ आया कि परीक्षा पास करके अगले साल में जाने का रास्ता तो बना ही नहीं है। सुबह उठ कर कॉलेज क्यों जाना है, वहां जाकर पढ़ना क्या है, क्योंकि इससे निकले, कैसे कोई नहीं जानता था। फिर तय पाया कि यूनिवर्सिटी के सामने धरना देंगे। इंदौर के बाहर से आए बच्चे नहीं जानते थे कि क्या करना सही है, कुछ वापस लौट गए, कुछ रहे। टेंट लग गया और सब वहां बैठ गए।

कोई नहीं जानता था कि इसके आगे क्या! न यूनिवर्सिटी से कोई बात करने आता था, न कोई सवाल पूछने। कुछ दिन यूं ही चलता रहा। फिर भाजपा और कांग्रेस के स्टूडेंट लीडर आए, लेकिन हम बगैर झंडे मसला पेश करते रहे। आखिरकार हल निकल भी आया। इतने साल बाद इन बातों की याद इसलिए आ रही है कि दिल्ली से शुरू हुआ आंदोलन दुनिया भर में गरम है। सीजेपी के बनने से लेकर जुलाई की शुरुआत तक कई बचते रहे कि पता नहीं कैसे हैं, किस पार्टी का हाथ इन पर है, लेकिन जिनको यह समझ आ रहा था कि अभी ये ही हैं, जो सिर्फ और सिर्फ हमारे ही मुद्दे पर बात कर रहे हैं, उन्होंने इनसे जुड़ना शुरू किया। यह जुड़ाव सिर्फ सोशल मीडिया तक ही नहीं रहा। पुलिस के डंडे खाकर भी वहीं बैठे हैं। रात-दिन एक-दूसरे की मदद

कर हक की बात कर रहे हैं।

जो हो रहा है सोशल मीडिया पर है और जो नहीं हो रहा, सरकार के खरीदे लोग दिखाने में लगे हैं। बात परेशान करती है कि इतने बरस बाद कुछ भी नहीं बदला। नब्बे के दशक में भी धांधली होती थी (सुना है मौजूदा शिक्षा मंत्री भी अपने दौर में इन्हीं मुद्दों पर विरोध दर्ज करवाते थे), पेपर लीक होते थे, फिर तो खिड़कियों में लटके लोगों को भी देखा है कि किस तरह बाहर से अंदर जवाब पहुंचाए जाते थे। 'बारहवीं फेल' फिल्म देखते दिल दुखता है, 'कोटा फैक्टरी' हो या 'एस्पिरेंट्स' देख तो लेते है लेकिन क्या उन बच्चों की तकलीफ समझ नहीं आती जो सिर्फ पढ़ाई पास या फेल होने को आंकते हैं। आखिर पढ़ाई का नतीजा जिंदगी के फैसले कैसे कर सकता है क्योंकि जिंदगी तो खुद रोजाना का इम्तिहान है।

भारत में करीब एक लाख स्कूल बंद हो गए हैं। जितनी सीट हैं उससे कई गुना बच्चे परीक्षा दे रहे हैं। हालत है कि तैयारी करने वाले घिसे-पिटे सिस्टम में गायब हैं। क्या वजह है कि कोटा, दिल्ली और कुछ हद तक इंदौर स्टूडेंट्स हब हो गए हैं। अगर आबादी बढ़ रही है तो उस हिसाब से पढ़ने-पढ़ाने की कूवत क्यों नहीं बढ़ रही। तीस बरस पहले जो बच्चे तैयारी कर रहे थे, उनके मां-बाप पढ़ाई के जरिए ही बेहतर जिंदगी दे सकते थे, उन्हें आवाज़ उठाने में हिचक होती थी। जो बच्चे आज सड़कों पर रील बना रहे हैं, धरने पर बैठे हैं, नारे लगा रहे हैं, उनके मां-बाप वे ही हैं जो अपने दौर के भ्रष्टाचार और सिस्टम भुक्तभोगी हैं।

एजुकेशन सिस्टम को सुधारने की कोई दिल से कोशिश नहीं हुई है। बच्चों की पढ़ाई और नौकरी पर लगातार बात करने वाले इकलौते रवीश कुमार थे। बात निकली है तो दूर तलक जाएगी। यही उम्मीद बनाए रखिए। कोशिश करें कि स्कूल में दाखिल बच्चा सिर्फ परीक्षा की तैयारी से बेहतर जिंदगी बना सकता है, यह न सीखकर, जिंदगी को जीना सीखे। पढ़ना चाहे तो तैयारी करे, मेहनत के मुताबिक नतीजे भी मिलें। सिस्टम की गलती का खामियाजा बच्चों की जिंदगी से न भरा जाए। बात है जिंदगी के उन बरसों की, जो सिर झुका कर किताबों में खपा दिए और फिर भी कुछ हासिल नहीं हुआ। इंजीनियर, डॉक्टर, आइएएस और ऐसी जितनी भी परीक्षाएं हैं, जिंदगी शुरू होने से पहले ही हताश कर रही हैं। इन्हें सुधारने की जरूरत है। बच्चे का मन न टूट जाए यह ध्यान में रख कर सिस्टम में बदलाव की जरूरत है।